● वर्ष : 04 ● अंक : 07 ● दिसंबर 2025 ● हिन्दी मासिक पत्रिका ₹ 40/-

RNI : CHHHIN 2022/86325

स्वतंत्र बोल

www.swatantrabol.com

लाल आतंक से मुक्त होता छत्तीसगढ़..

राज्योत्सव
26 लाख से अधिक
परिवारों को पक्की छत
पीएम आवास योजना
26 लाख
किसानों को लाभ
पीएम किसान सम्मान निधि
6,691 ग्राम
लाभांवित
धरती आबा ग्राम उत्कर्ष अभियान
₹5 करोड़
की लागत से चारधाम की तर्ज पर पांच शक्तिपीठों का विकास
शक्तिपीठ परियोजना
29 हजार से अधिक
राम भक्तों ने की अयोध्या धाम की निःशुल्क यात्रा
रामलला अयोध्या धाम दर्शन योजना
तर्ज पर रायपुर-नवा रायपुर-दुर्ग-भिलाई के विकास के लिए प्राधिकरण का गठन
राज्य राजधानी क्षेत्र (SCR)
₹7.5 लाख करोड़
के निवेश प्रस्ताव प्राप्त
इन्वेस्ट छत्तीसगढ़
₹47,447 करोड़
से रेल परियोजनाओं का क्रियान्वयन
रेलवे
सड़क
₹40 हजार करोड़
से अधिक लागत से राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास
लगभग 6 लाख
मजदूरों को प्रतिवर्ष
₹10,000 की आर्थिक सहायता
दीनदयाल उपाध्याय भूमिहीन कृषि मजदूर कल्याण योजना
महतारी वंदन योजना
लगभग 70 लाख
महिलाएं लाभांवित
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना
लगभग 37 लाख
महिलाएं लाभांवित
तेंदूपत्ता संग्रहण दर ₹5500 मानक बोरा
13 लाख संग्राहक परिवार लाभांवित
उद्यम क्रांति योजना
युवाओं को स्वरोज़गार के लिये
50% सब्सिडी
पर ब्याजमुक्त ऋण
जल जीवन मिशन
40 लाख
घरों तक नल कनेक्शन
पीएम जनमन योजना
लगभग 60 हजार
परिवारों को लाभ
मोदी की गारंटी से
संवर रहा छत्तीसगढ़
माननीय प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्र मोदी जी
के दूरदर्शी नेतृत्व में
छत्तीसगढ़ को मिल रही
नई पहचान
हमसे जुड़ने के लिए QR स्कैन करें
श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
छत्तीसगढ़ जनसंपर्क
Visit us : /ChhattisgarhCMO /DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

RNI : CHHHIN 2022/86325

स्वतंत्र बोल

www.swatantrabol.com

वर्ष : 04, अंक : 07, दिसंबर 2025

प्रेरणास्त्रोत
स्व. जीवन गिरि गोस्वामी

संपादक
राहुल गिरि गोस्वामी

कानूनी सलाहकार
आनंद मोहन तिवारी
दिनेश मिश्रा

प्रचार-प्रसार-विज्ञापन
शेखर सागर

ले-आउट/डिजाइन
द्वारिका प्रसाद साहू

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
राहुल गिरि गोस्वामी द्वारा
शॉप नं. 258, सेकण्ड फ्लोर
लालगंगा शॉपिंग कॉम्पलेक्स, घड़ी चौक
रायपुर (छ.ग.) पिन-492001 से प्रकाशित
एवं सागर प्रिंटर्स, पुरानी बस्ती, रायपुर (छ.ग.)
पिन-492001 से मुद्रित।
सम्पादक - राहुल गिरि गोस्वामी

रजिस्टर्ड कार्यालय
शॉप नं. 258, सेकण्ड फ्लोर
लालगंगा शॉपिंग कॉम्पलेक्स, घड़ी चौक
रायपुर (छ.ग.) पिन-492001
Email : Bolswatantra@gmail.com
Phone : 9754374333

(समस्त न्यायालीन प्रकरणों के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र रायपुर होगा।)

लाल आंतक का सरगना हिड़मा का खात्मा... 03

मुख्यमंत्री ने स्टेट हैंगर से विमान परिचालन सेवा... 08

हाउसिंग बोर्ड की 2060 करोड़ की लागत वाली... 09

शिल्पकारों के लिए स्थापित होगा ग्लेजिंग यूनिट 11

क्या RSS में मुस्लिम भी शामिल हो सकते हैं? 13

'तेरे इश्क में' धनुष-कृति सेनन की परफॉर्मेंस... 26

कोलकाता को मिला नया गेंदबाजी कोच 28

दिल्ली बम धमाका... भारत के लिए सधे... 31

भरोसा जितने में नाकाम क्यों?

दिसंबर में विष्णुदेव साय सरकार को दो साल पूरे हो गए। सरकार ने चुनाव पूर्व मोदी के गारंटी में किये वादे अनुसार आम लोगो के लिए अनेको काम किया है, सरकार का मंत्रिमंडल भी पूरा हो गया। उसके बाद भी सरकार की छवि आम लोगो के बीच बेहतर नहीं हो सका है, लोगो के मन में डॉ रमन सिंह और भूपेश बघेल की यादें जा नहीं पा रही है। आखिर ऐसा क्यों हो रहा कि लोग बातचीत में रह रहकर दोनों पूर्व मुख्यमंत्रीयो को याद कर लेते है। सरकार के सिपहसालार और छवि बनाने वाले अधिकारी आखिर फेल हो रहे है ? इस पर सरकार को अब चिंतन करना होगा।

– राहुल गोस्वामी

लाल आंतक का सरगना हिड़मा का खात्मा...

हिडमा महज 5वीं कक्षा तक पढ़ा था। उसका कद 5 फुट 5 इंच था। वह 20 बड़े नक्सली हमलों का मास्टरमाइंड था। 51 वर्षीय हिडमा नक्सलियों के सबसे खतरनाक चेहरों में से एक था। वह छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र के जंगलों में घूमकर सुरक्षा बलों पर हमला करता था। उस पर दर्जनों जवानों की हत्या का आरोप था। वह नक्सलियों की बटालियन का कमांडर था और उस पर 45 लाख रुपये का इनाम घोषित था। 25 मई 2013 की झीरम घाटी की दर्दनाक वारदात का भी मास्टरमाइंड वही था, जिसमें कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं सहित 33 लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया था।

खूंखार नक्सली हिडमा का खात्मा हो गया है। गुरुवार को पूवर्ती गांव में हिडमा और उसकी पत्नी राजे का अंतिम संस्कार किया गया। पूवर्ती गांव के आसपास 10 किमी तक पुलिस का पहरा था। इसकी वजह से कोई नक्सली हिडमा की अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो पाया। पहले गांव के लोगों को यकीन नहीं हो रहा था कि हिडमा मारा गया। झोपड़ीनुमा घर में उसकी बूढ़ी मां रहती है। हिडमा के गांव में उसकी मौत पर नारों की गूंज नहीं रोने-बिलखने की आवाज आ रही थी।

सैकड़ों हत्याओं का आरोपी था हिडमा

हिडमा अपने इलाके के लिए नक्सलवाद का पोस्टर बॉय था। उसकी मौत पर गांव में मातम है लेकिन हिडमा ने सैकड़ों माताओं की गोदें सुनी की है और महिलाओं के सुहाग उजाड़े हैं। गांव के कई लोगों ने आज तक हिडमा को देखा नहीं है। बूढ़ी मां के लिए हिडमा के गांवों वालों ने कंबल और चादरें दान कीं, ताकि चिता आसानी से जल सके।

200 से ज्यादा ग्रामीण जमा हुए

पूवर्ती गांव के आसपास पुलिस का भारी पहरा था। इसकी वजह से सिर्फ ग्रामीण लोग ही यहां आए थे। गांव में 200 से ज्यादा ग्रामीण ही इकट्ठा हुए थे। हिडमा के शव आने के कारण सुरक्षाबलों ने साप्ताहिक हाट को रद्द कर दिया था। पुलिस को आशंका थी कि नक्सली आ सकते हैं। अंतिम संस्कार शांतिपूर्ण ढंग से हो सके।

खूंखार नहीं था यह

वहीं, हिडमा की पत्नी राजे के भाई ने बताया कि

हिडमा खूंखार नहीं, बल्कि बहुत शांत स्वभाव का था। वह उनसे कभी माओवादी बनने को नहीं कहता था, बल्कि पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान देने और मेहनत करने की सलाह देता था। उसने कहा कि यह लड़ाई हमारी नहीं है। इस जंग में बस्तर के नौजवान मर रहे हैं।

रोने-बिलखने की गूंज सुनाई देने लगी

इसके साथ ही जैसे ही शवों को बाहर निकाला गया, पूवर्ती गांव में 'रून-सौन' की पारंपरिक मातम की आवाजें गूंजने लगीं। यह एक तेज, रोलिंग विलाप था जो एक घर से शुरू होकर दूसरे घर तक पहुंच रहा था। वीडियो में हिडमा की मां और रिश्तेदार सिर पकड़े हुए, दुख में झूमते हुए दिखाई दे रहे थे। एक रिश्तेदार ने कहा कि यह आज की विचारधारा नहीं है। यह सिर्फ एक मां,

एक परिवार और एक गांव है जिसने किसी ऐसे व्यक्ति को खो दिया जिसे वे एक होनहार लड़के के रूप में जानते थे।

सुकमा में आतिशबाजी

जब हिडमा के एनकाउंटर में मारे जाने की खबर आई, तो सुकमा के कुछ हिस्सों में आतिशबाजी हुई थी, लेकिन पूवर्ती में माहौल बिल्कुल विपरीत था। पूरे गांव पर मातम का अंधेरा छा गया था। यह वही गांव था जिसने एक नंगे पैर चलने वाले लड़के को विद्रोह का सबसे वांछित चेहरा बनते देखा था। जैसे ही उसके मौत की खबर परिवार तक पहुंची, हिडमा की बूढ़ी मां ने पुलिस से भावनात्मक अपील की थी।

अब मैं बूढ़ी हो गई

उन्होंने अधिकारियों से कहा था कि मैं अब बूढ़ी हो गई हूं। मैं अपने बेटे का शव गांव नहीं ला सकती। आप उसे यहां ले आएं ताकि मैं उसका अंतिम संस्कार कर सकूं। पुलिस ने परिवार को आंध्र प्रदेश की यात्रा में मदद की और स्थानीय अधिकारियों के साथ मिलकर शवों को सुकमा तक पहुंचाने की व्यवस्था की। जब उसके बेटे और बहू के शव ताबूतों में घर लौटे, तो उस मां को यह सच्चाई स्वीकार करनी पड़ी कि वह अब कभी दरवाजे से अंदर नहीं आएगा, जबकि उसने एक बार उससे 'वापस आकर शांति से रहने' की गुहार लगाई थी।

पूवर्ती गांव में अलग पहचान

हिडमा, जो माओवादी आंदोलन का एक प्रमुख चेहरा था, अपने गांव पूवर्ती में एक अलग पहचान रखता था। जहां बाहरी दुनिया उसे एक खूंखार आतंकवादी के रूप में जानती थी, वहीं उसके अपने लोग उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते थे जिसने अपने समुदाय के लिए कुछ किया हो। उसकी मां, मडवी पोज्जे, ने अपने बेटे के अंतिम संस्कार के समय भारी दु:ख व्यक्त किया। उन्होंने चिता पर कंबल और चादरें चढ़ाईं, जो उनके प्यार और सम्मान का प्रतीक था। यह परंपरा आदिवासी समुदायों में आम है, जहां लोग अपने प्रियजनों के लिए कपड़े दान करते हैं ताकि उनकी आत्मा को शांति मिले और चिता आसानी से जल सके।

हिडमा को किया जात में शामिल

वहीं, अंतिम संस्कार से पहले हिडमा को जात में शामिल किया गया। आदिवासी परंपरा के अनुसार इसे जात से बाहर कर दिया जाता है। दरअसल, हिडमा नक्सलियों के बाल संघम में शामिल हुआ था। इसके बाद वह आदिवासी रीति रिवाज के किसी कार्यक्रम में शामिल नहीं हुआ था। इसी वजह से उसे फिर जात में शामिल करवाया गया।

लाल कफन दिया गया

गौरतलब है कि आम तौर पर अंतिम संस्कार के दौरान लोगों को सफेद कफन चढ़ाया जाता है। हिडमा नक्सली था। इसकी वजह से उसे लाल कफन दिया गया। यह नक्सलियों की परंपरा है। हिडमा और उसकी पत्नी राजे को लाल कफन दिया गया।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में मत्स्य उत्पादन के क्षेत्र में हासिल की उल्लेखनीय उपलब्धि

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में शासन की नीतियों एवं शासकीय योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से जशपुर जिला आज मत्स्य उत्पादन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति कर रहा है। मत्स्य उत्पादन न केवल पोषण सुरक्षा का माध्यम है, बल्कि यह बड़े पैमाने पर ग्रामीण रोजगार सृजन का भी एक सशक्त माध्यम बन चुका है। प्रदेश में मत्स्य पालन को प्रोत्साहन देने हेतु शासन द्वारा निरंतर नवाचारों को अपनाया जा रहा है। किसानों को आधुनिक तकनीकों के उपयोग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है तथा उन्हें अनुदान राशि भी प्रदान की जा रही है। इन प्रयासों से मत्स्य उत्पादक किसान आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से अग्रसर हैं। पिछले 22 महीनों में योजनाओं के प्रभावी क्रियान्यवन से जिले में मत्स्य बीज स्पॉन उत्पादन 18.50 करोड़, मतसय बीज स्टे.फ्राय उत्पादन 2.55 करोड़, तथा मत्स्य बीज संचयन 2.94 करोड़ तक पहुँच गया है। जिले में कुल 22,805 मीट्रिक टन मत्स्य उत्पादन दर्ज किया गया।

ग्रामीण स्तर पर मत्स्य पालन को बढ़ावा देने हेतु 77.677 हेक्टेयर ग्रामीण तालाबों और 295.270 हेक्टेयर जलाशयों का पट्टा आबंटन किया गया। साथ ही 8 मछुआ सहकारी समितियों को शासन द्वारा नवीन योजना के अंतर्गत अनुदान स्वीकृत किया गया। मछुआरों के सामाजिक सुरक्षा के लिए 6,904 हितग्राहियों को मत्स्यजीवी दुर्घटना बीमा योजना के तहत लाभान्वित किया गया है। वहीं अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के 63 हितग्राहियों द्वारा मौसमी तालाबों में मत्स्य बीज संवर्धन का लाभ दिया गया है। साथ ही सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग 817 लाभार्थियों ने 50 प्रतिशत अनुदान पर फिंगरलिंग क्रय कर संचयन कार्य किया है। सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के 430 हितग्राहियों को नाव-जाल वितरण और 227 लाभार्थियों को फुटकर मछली विक्रय योजना के तहत आर्थिक सहायता दी गई है। इसी प्रकार से झींगा पालन के क्षेत्र में भी 55 इकाइयों की स्थापना से मत्स्य व्यवसाय में विविधता आई है।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मिला बल

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना मत्स्य पालन क्षेत्र में नीली क्रांति लाने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई एक महत्वाकांक्षी योजना है। इस योजना का मुख्य लक्ष्य देश में मत्स्य उत्पादन में वृद्धि करना, मत्स्य निर्यात को दोगुना करना तथा बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर सृजित करना है। यह योजना मछुआरों और मत्स्य पालकों को बुनियादी सुविधाओं, आधुनिक उपकरणों तथा वित्तीय सहायता के माध्यम से सशक्त बनाती है। इसके अंतर्गत मत्स्य पालन से जुड़े हितग्राहियों को आकस्मिक मृत्यु, स्थायी विकलांगता अथवा अस्पताल में भर्ती होने की स्थिति में बीमा सुरक्षा भी प्रदान की जाती है। साथ ही मछली पालन को एक व्यवसाय के रूप में शुरू करने के लिए ऋण पर सब्सिडी प्रदान करता है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजनार्तृगत हितग्राहियों को स्वयं की भूमि में तालाब, पोखर संवर्धन, पौंडर लाइनर के निर्माण हेतु अनुसूचित जाति एवं जनजाति के हितग्राहियों एवं महिलाओं को 60 प्रतिशत तक एवं सामान्य एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के हितग्राहियों को 40 प्रतिशत तक की अनुदान राशि प्रदान की जाति है।

शिक्षा किसी भी समाज एवं राष्ट्र की उन्नति का मुख्य आधार : मुख्यमंत्री साय

बालोद जिले के ग्राम संबलपुर में छत्तीसगढ़ प्रदेश कोसरिया मरार समाज द्वारा आयोजित युवक-युवती परिचय सम्मेलन एवं शाकंभरी महोत्सव में शामिल हुए मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि शिक्षा किसी भी समाज एवं राष्ट्र की उन्नति का मुख्य आधार है। इसलिए हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि आने वाली पीढ़ी को उच्च शिक्षित और ज्ञानवान बनाएं। मुख्यमंत्री श्री साय ने बालोद जिले के डौंडीलोहारा विकासखंड के ग्राम संबलपुर में छत्तीसगढ़ प्रदेश कोसरिया मरार समाज द्वारा आयोजित युवक-युवती परिचय सम्मेलन एवं शाकंभरी महोत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में यह बात कही।

मुख्यमंत्री श्री साय ने सर्वप्रथम शाकंभरी माता, भगवान श्रीराम, महात्मा ज्योतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले के तैलचित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री श्री साय ने कोसरिया मरार समाज को धरती माता की सेवा करने वाला मेहनतकश समाज बताते हुए समाज के कार्यों की भूरि-भूरि सराहना की।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस अवसर पर कोसरिया मरार समाज द्वारा आयोजित युवक-युवती परिचय सम्मेलन एवं शाकंभरी महोत्सव को समाज का महत्वपूर्ण अवसर बताते हुए इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन समाज को सुदृढ़ करने के साथ-साथ स्वजातीय जनों के बीच मेल-मिलाप और एकता को भी प्रोत्साहित करते हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने समाज द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह समारोह की भी सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन न केवल अनावश्यक खर्च को रोकते हैं, बल्कि समाज के कमजोर तबके को

आर्थिक संबल भी प्रदान करते हैं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने समाज एवं राष्ट्र के विकास में शिक्षा के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि शिक्षा केवल शासकीय सेवाओं के लिए ही नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का सबसे बड़ा माध्यम है। उन्होंने समाज के सभी परिवारों से आग्रह किया कि वे अपने बच्चों की समुचित शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित करें। साथ ही उन्होंने नशा को समाज की अवनति का प्रमुख कारण बताते हुए समाज के लोगों से नशापान से सर्वथा दूर रहने की अपील की।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि सभी समाजों की प्रगति ही छत्तीसगढ़ राज्य एवं देश की प्रगति का आधार है। मरार समाज की उन्नति में ही प्रदेश की उन्नति निहित है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आज का यह आयोजन निश्चित रूप से कोसरिया मरार समाज की एकता और प्रगति को नई दिशा देगा। श्री साय ने कहा कि मरार समाज खेती-किसानी और सब्ज़ी उत्पादन के माध्यम से न केवल समाज के सभी वर्गों की सेवा कर रहा है, बल्कि राज्य और देश के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री साय ने राज्य सरकार द्वारा किसानों के हित में संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी भी दी। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार अन्नदाता किसानों के हितों को सर्वोपरि मानते हुए प्रति क्विंटल 3100 रुपए की दर से धान खरीदी कर रही है। साथ ही राज्य में सिंचाई के रकबे में वृद्धि हेतु विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त राज्य में पशुपालन को प्रोत्साहित करने तथा दलहन-तिलहन फसलों के उत्पादन में वृद्धि हेतु भी ठोस व्यवस्था की गई है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने इस अवसर पर कोसरिया मरार समाज द्वारा प्रकाशित युवक-युवती परिचय माला पुस्तिका का विमोचन किया। उन्होंने शाकंभरी महोत्सव के दौरान आयोजित सामूहिक विवाह समारोह में परिणय-सूत्र में बंधने वाले नव-दंपत्तियों को आशीर्वाद देते हुए उन्हें सुखी एवं सफल दांपत्य जीवन की शुभकामनाएँ दीं। समारोह में संजारी-बालोद विधानसभा क्षेत्र की विधायक संगीता सिन्हा, छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज संघ के उपाध्यक्ष यज्ञदत्त शर्मा सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं समाज प्रमुख उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने स्टेट हैंगर से विमान परिचालन सेवा का किया शुभारंभ

एयरपोर्ट के यात्री टर्मिनल पर वीवीआईपी मूवमेंट के दौरान आम यात्रियों को होने वाली असुविधा होगी समाप्त

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने आज स्वामी विवेकानंद विमानतल परिसर, माना कैम्प के समीप स्टेट हैंगर के नियमित परिचालन का शुभारंभ किया। शुभारंभ के पश्चात मुख्यमंत्री श्री साय अपने गुजरात प्रवास हेतु इसी हैंगर से रवाना हुए।

इस पहल से एयरपोर्ट के यात्री टर्मिनल पर वीवीआईपी मूवमेंट के दौरान आम यात्रियों को होने वाली असुविधा समाप्त होगी।स्टेट हैंगर के प्रारम्भ होने से राज्य में विशेष विमान द्वारा वीवीआईपी आगमन एवं प्रस्थान की व्यवस्थाएँ अब और अधिक सुगम एवं व्यवस्थित हो जाएगी।

उल्लेखनीय है कि स्टेट हैंगर का निर्माण वर्ष 2012 में लोक निर्माण विभाग (PWD) द्वारा लगभग 6.50 करोड़ रुपये की लागत से पूर्ण किया गया था। तथापि, इसके परिचालन के लिए आवश्यक डीजीसीए (DGCA) और बीसीएएस (BCAS) की विभिन्न अनुमतियाँ हाल ही में 31 अक्टूबर 2025 को प्राप्त हुई है। अनुमतियां मिलने के पश्चात अब हैंगर का नियमित परिचालन आरम्भ किया गया है। नवनिर्मित स्टेट हैंगर को टैक्सी वे 'E' के माध्यम से एयरपोर्ट रनवे से जोड़ा गया है, जिससे वीवीआईपी मूवमेंट अधिक सुगमता से हो सकेगा और एयरपोर्ट परिसर के भीतर अलग व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। राज्य शासन के स्वामित्व वाले विमान एवं हेलीकॉप्टरों के रखरखाव के लिए भी यह नया स्टेट हैंगर उपयोग में लाया जाएगा। इससे अब एयरपोर्ट परिसर के भीतर स्थित किराए के स्टेट हैंगर पर निर्भरता समाप्त होगी। इस अवसर पर विधायक मोतीलाल साहू, माना कैम्प नगर पंचायत अध्यक्ष संजय यादव, मुख्यमंत्री के सचिव राहुल भगत, मुख्यमंत्री के उप सचिव सूरज साहू सहित अन्य जनप्रतिनिधि और वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

हाउसिंग बोर्ड की 2060 करोड़ की लागत वाली आवासीय परियोजनाओं का शुभारंभ

राज्य के 26 जिलों में हाउसिंग बोर्ड की 55 परियोजनाओं से बनेंगे 12 हजार से अधिक आवास

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज रायपुर के शंकर नगर स्थित बीटीआई ग्राउण्ड में तीन दिवसीय राज्य स्तरीय आवास मेले में छत्तीसगढ़ हाउसिंग बोर्ड की 2060 करोड़ की आवासीय परियोजनाओं का शुभारंभ किया। यह 55 परियोजना राज्य के 26 जिलों में शुरू होंगी, जिनके माध्यम से 12 हजार से अधिक किफायती एवं गुणवत्तापूर्ण मकानों का निर्माण किया जाएगा। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने हाउसिंग बोर्ड के एआई चैट बॉट और पोर्टल का भी शुभारंभ किया। इसके माध्यम से उपभोक्ताओं को हाउसिंग बोर्ड की आवासीय परियोजनाओं की जानकारी सहजता से मिल सकेगी।

इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह, आवास एवं पर्यावरण मंत्री ओपी चौधरी, राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा, विधायक मोतीलाल साहू, विधायक पुरंदर मिश्रा, विधायक अनुज शर्मा, अध्यक्ष गृह निर्माण मंडल अनुराग सिंहदेव, फिल्म विकास निगम की अध्यक्ष सुमोना सेन, तेलघानी बोर्ड के अध्यक्ष जतीन साहू सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में नागरिकगण उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि वर्तमान में छत्तीसगढ़ हाउसिंग बोर्ड की टीम बहुत बेहतर है। राज्य के लोगों को किफायती और गुणवत्तापूर्ण मकान उपलब्ध कराने के लिए नवाचार के साथ आगे बढ़ रही है। छत्तीसगढ़ सरकार ने हाउसिंग बोर्ड के 790 करोड़ रूपए के कर्ज को अदा कर बोर्ड को कर्ज मुक्त कर दिया है ताकि बोर्ड बेहतर रणनीति के साथ काम करें। उन्होंने जरूरतमंदों एवं आवासहीनों को पक्का मकान दिए जाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ ही नहीं वरन पूरे देश में संचालित प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि 2 वर्षों में छत्तीसगढ़ राज्य में इस योजना के तहत 26 लाख लोगों को आवासों की मंजूरी दी गई। सबका आवास बन रहा है। पीएम जनमन योजना के तहत विशेष पिछड़ी जनजातियों के लिए 32 हजार तथा बस्तर में आत्मसमर्पित नक्सलियों और नक्सल पीड़ित परिवारों के लिए 15 हजार आवास की मंजूरी दी गई है।

मुख्यमंत्री ने इस मौके पर राज्य स्तरीय आवास मेले में आवास बुकिंग का प्रमाण पत्र, हाउसिंग बोर्ड के उपभोक्ताओं को आवास की चाबी तथा फ्री होल्ड मकान का प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए उन्हें बधाई और शुभकामनाएं दी।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने छत्तीसगढ़ हाउसिंग बोर्ड के कार्यों की सराहना की और कहा कि बोर्ड की वर्तमान टीम, हाउसिंग के क्षेत्र में अच्छा काम

कर रही है। उन्होंने कहा कि आवास मेले की सफलता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब से मेला शुरू हुआ है रोड पर जाम लग गया है और टैऊफिक व्यवस्था संभल नहीं रही है। उन्होंने राज्य में जरूरतमंद परिवारों को आवास उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की और कहा कि इसके लिए उन्होंने बजट में 14 हजार करोड़ रूपए का प्रावधान किया। डॉ. सिंह ने कहा कि हाउसिंग बोर्ड की सभी परियोजनाओं को जिलों में अच्छा प्रतिसाद मिलेगा।

आवास एवं पर्यावरण मंत्री ओपी चौधरी ने हाउसिंग बोर्ड के काम-काज को बेहतर बनाने तथा उपभोक्ताओं को राहत देने के लिए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में लिए गए फैसलों के लिए आभार जताया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की विशेष पहल से छत्तीसगढ़ हाउसिंग बोर्ड 790 करोड़ रूपए के कर्ज से मुक्त हो चुका है। उन्होंने कहा कि साल भर के भीतर हाउसिंग बोर्ड ने 672 करोड़ का बिजनेस किया है। लैंड डायवर्सन एवं फ्री होल्ड की रियायत सरकार ने देकर हाउसिंग बोर्ड और उपभोक्ताओं को राहत दी है। चौधरी ने कहा कि हाउसिंग बोर्ड उपभोक्ताओं की डिमांड के आधार पर आवासीय परियोजनाओं के निर्माण का काम शुरू करेगा।

कार्यक्रम को हाउसिंग बोर्ड के अध्यक्ष अनुराग सिंहदेव ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में हाउसिंग बोर्ड राज्य के सभी जिलों में मकान का निर्माण करेगा। हम अगले चरण में सभी विधानसभा क्षेत्रों में भी आवासीय परियोजनाएं लॉन्च करेंगे।

गौरतलब है कि बीटीआई ग्राउंड में यह राज्य स्तरीय आवास मेला 25 नवम्बर तक चलेगा। मेले के पहले दिन सुबह से ही मेला ग्राउंड में हाउसिंग बोर्ड की आवासीय परियोजनाओं की जानकारी लेने और आवास बुक कराने के लिए लोगों का हुजुम उमड़ पड़ा था। शंकर नगर टर्निंग प्वाइंट से खम्हारडीह जाने वाली रोड पर जाम की स्थिति निर्मित हो गई थी।

शिल्पकारों के लिए स्थापित होगा ग्लेजिंग यूनिट

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आज जशपुर जिले के ग्राम नारायणपुर में कुम्हार समाज द्वारा आयोजित श्री विष्णु महायज्ञ एवं चक्र पूजा कार्यक्रम में शामिल हुए और पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। उन्होंने इस अवसर पर ग्राम गोरिया में माटी कला बोर्ड के माध्यम से कुम्हारों के लिए ग्लेज़िंग यूनिट स्थापित करने तथा कुम्हार समाज के मंगल भवन के विस्तार के लिए 25 लाख रुपए की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में सरगुजा संभाग के 100 कुम्हारों को इलेक्ट्रॉनिक चाक का भी वितरण किया।

कुम्हारों को 100 इलेक्ट्रॉनिक चाक का वितरण

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि कुम्हार समाज द्वारा आयोजित श्री विष्णु महायज्ञ का यह पवित्र आयोजन हमारी सांस्कृतिक विरासत का जीवंत उदाहरण है। चक्र पूजा केवल मिट्टी के चाक की आराधना नहीं, बल्कि सृष्टि के निर्माण, परिश्रम, रचनात्मकता और मानव जीवन की निरंतरता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि कुम्हार समाज छत्तीसगढ़ी संस्कृति का अभिन्न अंग है। आप सभी मिट्टी की कला में सिद्धहस्त हैं। आपकी रचनात्मक मेहनत हमारे तीज-त्योहारों और धार्मिक अनुष्ठानों को जीवंत और पूर्णता प्रदान करती है। हमारी सरकार आपकी इस अनमोल विरासत के संरक्षण, संवर्धन और सशक्तिकरण के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ माटी कला बोर्ड के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक चाक (इलेक्ट्रिक पॉटर व्हील) का वितरण किया जा रहा है, जिससे मेहनत कम होगी, उत्पादन क्षमता बढ़ेगी और उत्पादों को बेहतर फिनिशिंग मिलेगी। इससे बाजार में ऊँचा मूल्य मिलेगा और वर्षभर स्थिर आमदनी सुनिश्चित होगी। उन्होंने कहा कि कारीगरों के प्रशिक्षण के लिए नई डिजाइन, आधुनिक तकनीक और उद्यमिता से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित किए जा रहे हैं। हमारी सरकार कुम्हारों को वित्तीय सहायता भी प्रदान कर रही है, जिससे आप नए उपकरण खरीदकर अपने व्यवसाय का विस्तार कर सकें। मार्केटिंग के लिए मेलों, प्रदर्शनियों और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म्स का उपयोग बढ़ाया जा रहा है, जिससे आपकी कला पूरे देश में ही नहीं, बल्कि विदेशों तक पहुँच सके। उन्होंने छत्तीसगढ़ की माटी कला को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने की अपील की।

कार्यक्रम में वित्त मंत्री ओ.पी. चौधरी, विधायक गोमती साय और रायमुनी भगत, पद्मजागेश्वर यादव, माटी कला बोर्ड के अध्यक्ष शंभूराम चक्रवर्ती, जिला पंचायत अध्यक्ष सालिक साय, प्रबल प्रताप सिंह जूदेव, नगर पालिका अध्यक्ष जशपुर अरविंद भगत, जिला पंचायत उपाध्यक्ष शौर्य प्रताप सिंह जूदेव, नगर पालिका जशपुर उपाध्यक्ष यश प्रताप सिंह जूदेव, कृष्ण कुमार राय, विजय आदित्य प्रताप सिंह जूदेव सहित अनेक जनप्रतिनिधि, सामाजिक बंधु और बड़ी संख्या में आम नागरिक उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ में जैव ईंधन के उत्पादन में 3,500 करोड़ रुपये का हो रहा निवेश

छत्तीसगढ़ बायोफ्यूल विकास प्राधिकरण द्वारा राजधानी रायपुर में बायोफ्यूल एण्ड बायो एनर्जी एक्सपो का आयोजन 7 से 9 नवंबर तक स्थानीय श्रीराम बिजेनस पार्क में किया गया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ बायोफ्यूल रोडमैप विजन 2024-29 पर आयोजित सेमीनार में बायोफ्यूल तकनीक पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। छत्तीसगढ़ बायोफ्यूल विकास प्राधिकरण के सीईओ श्री सुमित सरकार ने छत्तीसगढ़ की जैव ईंधन रोडमैप की चर्चा करते हुए बताया कि छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में राज्य को बायोफ्यूल के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाने की पहल की जा रही है।

सीईओ श्री सुमित सरकार ने बताया कि छत्तीसगढ़ में निजी कंपनियों ने छत्तीसगढ़ औद्योगिक नीति 2024-2030 के अनुरूप, लगभग 3,500 करोड़ रुपये का निवेश किया जा रहा है। गेल और बीपीसीएल जैसी ओजीएमसी ने विभिन्न यूएलबी में 8 एमएसडब्ल्यू/बायोमास आधारित संपीड़ित बायोगैस संयंत्र स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। ओएनजीसी ग्रीन और एचपीसीएल ग्रीन वर्तमान में सीबीजी उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करने के लिए विभिन्न स्थानों का सर्वेक्षण कर रही हैं।

राज्य में चावल, मक्का और चने के अवशेषों का उपयोग करके बायोएथेनॉल और कम्प्रेस्ड बायोगैस बनाने के लिए फीडस्टॉक-आधारित परीक्षण किया जा रहा हैं। इसके साथ ही कृषि अपशिष्ट को सब्सट्रेट के रूप में उपयोग करके एंजाइम उत्पादन परीक्षण और नए माइक्रोबियल स्ट्रेन का संवर्धन हो रहा है। उन्होंने बताया कि बायो-विमानन ईंधन के क्षेत्र में सीबीडीए अब बायोमास-आधारित हाइड्रोजन के उत्पादन की तैयारी कर रहा है, जिसका उपयोग बाद में हाइड्रोप्रोसेस्ड एस्टर और फैटी एसिड तकनीक के माध्यम से एसएएफ उत्पादन के लिए किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ में अधिशेष चावल को प्राथमिक फीडस्टॉक के रूप में उपयोग करके बायोएथेनॉल उत्पादन के लिए पहले ही एक मानक संचालन प्रक्रिया विकसित कर ली है। हाल ही में, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई), कानपुर के सहयोग से, सीबीडीए बायोफ्यूल कॉम्प्लेक्स स्थल, ग्राम गोढ़ी, जिला दुर्ग में एक वैकल्पिक फीडस्टॉक स्थापित करने के लिए चुकंदर की खेती पर परीक्षण शुरू किया है। अगला कदम इथेनॉल उत्पादन के लिए इसकी क्षमता का परीक्षण करना है, जिससे भारत के 20 प्रतिशत मिश्रण लक्ष्य और उससे आगे की उपलब्धि में सहायता मिलेगी, जिससे इस पहल की निरंतर सफलता सुनिश्चित होगी।

क्या RSS में मुस्लिम भी शामिल हो सकते हैं?

आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने संघ की 100 साल की यात्रा को संबोधित करते हुए रविवार को कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) किसी व्यक्ति या राजनीतिक पार्टी को नहीं, बल्कि नीतियों का समर्थन करता है। दरअसल, बेंगलुरू में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आरएसएस चीफ मोहन भागवत ने कहा कि आरएसएस मुसलमानों और ईसाइयों सहित सभी समुदायों का स्वागत करता है, बशर्ते वे खुद को भारत माता के पुत्र और व्यापक हिंदू समाज के सदस्य के रूप में पहचानें। हालांकि, इस दौरान उन्होंने स्पष्ट किया कि संघ अपने सदस्यों को जाति या धर्म के आधार पर वर्गीकृत नहीं करता है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के चीफ मोहन भागवत ने कहा कि संघ में किसी मुसलमान या ईसाई को अनुमति नहीं है। केवल हिंदुओं को ही अनुमति है। मुसलमान, ईसाई या किसी भी समुदाय के लोग संघ में आ सकते हैं। हालांकि, उन्हें अपनी पहचान बाहर रखनी होगी।

मोहन भागवत ने कहा कि मुसलमान शाखा में आते हैं, ईसाई शाखा में आते हैं और हिंदू कहे जाने वाले समाज की अन्य सभी जातियां शाखा में आती हैं। हम उनकी गिनती नहीं करते हैं और ना ये कभी पूछते हैं कि वे कौन हैं। हम सभी भारत माता के पुत्र हैं और संघ इसी तरीके से काम करता है।

'किसी राजनीतिक दल का समर्थन नहीं करता संघ'

मोहन भागवत ने स्पष्ट किया कि संघ किसी राजनीतिक दल का समर्थन नहीं करता है। उन्होंने कहा कि हम किसी चुनाव में हिस्सा नहीं लेते, क्योंकि संघ समाज को एकजुट करने का काम करता है और राजनीति बांटने का काम करती है। हम नीतियों का समर्थन करते हैं।

उन्होंने उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया कि हम अयोध्या में राम मंदिर चाहते थे, इसलिए हमारे स्वयंसेवकों ने उन लोगों को वोट दिया जो इसके निर्माण के साथ खड़े थे। उन्होंने कहा अगर कांग्रेस ने ये काम किया होता, तो हम उनका समर्थन करते।

अयोध्या से पीएम मोदी ने पूरे देश को एक सूत्र में पिरोया

अयोध्या नगरी भारत की सांस्कृतिक चेतना के एक और उत्कर्ष बिंदु की साक्षी बना। पीएम मोदी ने कहा कि सम्पूर्ण भारत, सम्पूर्ण विश्व, राममय है। हर रामभक्त के हृदय में अद्वितीय संतोष है, असीम कृतज्ञता है, अपार अलौकिक आनंद है। सदियों के घाव भर रहे हैं, सदियों की वेदना विराम पा रही है, सदियों का संकल्प सिद्धि को प्राप्त हो रहा है। उस यज्ञ की पूर्णाहुति है, जिसकी अग्नि 500 वर्ष तक प्रज्वलित रही। जो यज्ञ एक पल भी आस्था से डिगा नहीं, एक पल भी विश्वास से टूटा नहीं। भगवान श्री राम के गर्भगृह की अनंत ऊर्जा, श्री राम परिवार का दिव्य प्रताप, इस धर्म ध्वजा के रूप में, इस दिव्यतम, भव्यतम मंदिर में प्रतिष्ठापित हुआ।

'ये भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज'

पीएम मोदी ने कहा, 'ये धर्म ध्वजा केवल एक ध्वजा नहीं, ये भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है। इसका भगवा रंग, इस पर रचित सूर्यवंश की ख्याति, वर्णित ओम् शब्द और अंकित कोविदार वृक्ष रामराज्य की कीर्ति को प्रतिरूपित करता है। ये ध्वज संकल्प है, ये ध्वज सफलता है। ये ध्वज संघर्ष से सृजन की गाथा है, ये ध्वज सदियों से चले आ रहे स्वप्नों का साकार स्वरूप है। ये ध्वज संतों की साधना और समाज की सहभागिता की सार्थक परिणीति है। आने वाली सदियों और सहस्त्र-शताब्दियों तक, ये धर्मध्वज प्रभु राम के आदर्शों और सिद्धांतों का उद्घोष करेगा। ये धर्मध्वज आह्वान करेगा- सत्यमेव जयते नानृतं! यानी, जीत सत्य की ही होती है, असत्य की नहीं। ये धर्मध्वज उद्घोष करेगा- सत्यम्-एकपदं ब्रह्म सत्ये धर्मः प्रतिष्ठितः। अर्थात्, सत्य ही ब्रह्म का स्वरूप है, सत्य में ही धर्म स्थापित है। ये धर्मध्वज प्रेरणा बनेगा- प्राण जाए पर वचन न जाहीं। अर्थात्, जो कहा जाए, वही किया जाए। ये धर्मध्वज संदेश देगा- कर्म प्रधान विश्व रचि राखा! अर्थात्, विश्व में कर्म और कर्तव्य की प्रधानता हो। ये धर्मध्वज कामना करेगा- बैर न बिग्रह आस न त्रासा। सुखमय ताहि सदा सब आसा॥ यानी, भेदभाव, पीड़ा-परेशानी से मुक्ति, समाज में शांति और सुख हो। ये धर्मध्वज हमें संकल्पित करेगा- नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। यानी, हम ऐसा समाज बनाएं, जहां गरीबी न हो, कोई दुखी या लाचार न हो।'

सर्व समाज को मैसेज दे गए पीएम मोदी

कार्यक्रम में पीएम मोदी ने पूरे देश को एक सूत्र का संदेश दिया। उन्होंने कहा, 'हमारे ग्रन्थों में कहा गया है- आरोपितं ध्वजं दृष्ट्वा, ये अभिनन्दन्ति धार्मिकाः। ते अपि सर्वे प्रमुच्यन्ते, महा पातक कोटिभिः॥ यानी, जो लोग किसी कारण मंदिर नहीं आ पाते, और दूर से मंदिर के ध्वज को प्रणाम कर लेते हैं, उन्हें भी उतना ही पुण्य मिल जाता है। ये धर्मध्वज भी इस मंदिर के ध्येय का प्रतीक है। ये ध्वज दूर से ही रामलला की जन्मभूमि के दर्शन कराएगा। और, युगों-युगों तक प्रभु श्रीराम के आदेशों और प्रेरणाओं को मानव मात्र तक पहुंचाएगा मैं सम्पूर्ण विश्व के करोड़ों रामभक्तों को इस अविस्मरणीय क्षण की, इस अद्वितीय अवसर की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। मैं आज उन सभी भक्तों को भी प्रणाम करता हूं, हर उस दानवीर का भी आभार व्यक्त करता हूं, जिसने राम मंदिर निर्माण के लिए अपना सहयोग दिया। मैं राम मंदिर के निर्माण से जुड़े हर श्रमवीर, हर कारीगर, हर योजनाकार, हर वास्तुकार, सभी का अभिनंदन करता हूं।'

दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या से ही भगवान राम से जुड़े प्रसंगों के माध्यम से बिहार, झारखंड

और राजस्थान समेत पूरे देश को एक सूत्र में पिरोया। माना जाता है कि बिहार के दरभंगा में स्थित अहिल्या स्थान में प्रभु राम ने उन्हें शापमुक्त किया था। जनकपुर (नेपाल) और मिथिला क्षेत्र में हुए राम-सीता विवाह के प्रसंग, जिसमें महर्षि विश्वामित्र की प्रमुख भूमिका थी। ये प्रसंग अप्रत्यक्ष रूप से बिहार से जुड़ता है। संत तुलसीदास की राजस्थान यात्रा और वहां उनके द्वारा किए गए रामभक्ति प्रसार को कौन नहीं जानता। महर्षि वशिष्ठ, जिनके आश्रम के संदर्भ अरावली क्षेत्र में मिलते हैं, जिससे राजस्थान का संबंध स्थापित होता है।

प्राचीनता के साथ आधुनिकता का संदेश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, 'अयोध्या वह भूमि है, जहां आदर्श, आचरण में बदलते हैं। यही वह नगरी है, जहां से श्रीराम ने अपना जीवन-पथ शुरू किया था। इसी अयोध्या ने संसार को बताया कि एक व्यक्ति कैसे समाज की शक्ति से, उसके संस्कारों से, पुरुषोत्तम बनता है। जब श्रीराम अयोध्या से वनवास को गए, तो वे युवराज राम थे, लेकिन जब लौटे, तो मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर के आए। और उनके मर्यादा पुरुषोत्तम बनने में महर्षि वशिष्ठ का ज्ञान, महर्षि विश्वामित्र की दीक्षा, महर्षि अगस्त्य का मार्गदर्शन, निषादराज की मित्रता, मां शबरी की ममता, भक्त हनुमान का समर्पण, इन सबकी, अनगिनत ऐसे लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

विकसित भारत बनाने के लिए भी समाज की इसी सामूहिक शक्ति की आवश्यकता है। मुझे बहुत खुशी है कि राम मंदिर का ये दिव्य प्रांगण, भारत के सामूहिक सामर्थ्य की भी चेतना स्थली बन रहा है। यहां सप्तमंदिर बने हैं। यहां माता शबरी का मंदिर बना है, जो जनजातीय समाज के प्रेमभाव और आतिथ्य परंपरा की प्रतिमूर्ति हैं। यहां निषादराज का मंदिर बना है, ये उस मित्रता का साक्षी है, जो साधन नहीं, साध्य को, उसकी भावना को पूजती है। यहां एक ही स्थान पर माता अहिल्या हैं, महर्षि वाल्मीकी हैं, महर्षि वशिष्ठ हैं, महर्षि विश्वामित्र हैं, महर्षि अगस्त्य हैं, और संत तुलसीदास हैं। रामलला के साथ-साथ इन सभी ऋषियों के दर्शन भी यहीं पर होते हैं। यहां जटायु जी और गिलहरी की मूर्तियां भी हैं, जो बड़े संकल्पों की सिद्धि के लिए हर छोटे से छोटे प्रयास के महत्व को दिखाती हैं। मैं आज हर देशवासी से कहूंगा कि वो जब भी राम मंदिर आएं, तो सप्त मंदिर के दर्शन भी अवश्य करें। ये मंदिर हमारी आस्था के साथ-साथ, मित्रता, कर्तव्य और सामाजिक सद्भाव के मूल्यों को भी शक्ति देते हैं।'

अयोध्या के मंच से विकसित भारत का सपना

उन्होंने कहा, 'हम सब जानते हैं, हमारे राम भेद से नहीं, भाव से जुड़ते हैं। उनके लिए व्यक्ति का कुल नहीं, उसकी भक्ति महत्वपूर्ण है। उन्हें वंश नहीं, मूल्य प्रिय हैं। उन्हें शक्ति नहीं, सहयोग महान लगता है। आज हम भी उसी भावना से आगे बढ़ रहे हैं। पिछले 11 वर्षों में, महिला, दलित, पिछड़े, अति-पिछड़े, आदिवासी, वंचित, किसान, श्रमिक, युवा, हर वर्ग को विकास के केंद्र में रखा गया है। जब देश का हर व्यक्ति, हर वर्ग, हर क्षेत्र सशक्त होगा, तब संकल्प की सिद्धि में सबका प्रयास लगेगा। और सबके प्रयास से ही 2047, जब देश आज़ादी के 100 साल मनाएगा, हमें 2047 तक विकसित भारत का निर्माण करना ही होगा।

PM मोदी ने श्रीराम के व्यक्तित्व के बारे में बताया

पीएम मोदी ने प्रभु श्रीराम के व्यक्तित्व के बारे में कहा, 'हमें प्रभु राम से सीखना होगा। हमें उनके व्यक्तित्व को समझना होगा, हमें उनके व्यवहार को आत्मसात करना होगा, हमें याद रखना होगा, राम यानी- आदर्श, राम यानी- मर्यादा, राम यानी- जीवन का सर्वोच्च चरित्र। राम यानी- सत्य और पराक्रम का संगम, 'दिव्यगुणैः शक्रसमो रामः सत्यपराक्रमः।' राम यानी- धर्मपथ पर चलने वाला व्यक्तित्व, 'रामः सत्पुरुषो लोके सत्यः सत्यपरायणः।' राम यानी- जनता के सुख को सर्वोपरि रखना, प्रजा सुखत्वे चंद्रस्य। राम यानी- धैर्य और क्षमा का दरिया 'वसुधायाः क्षमागुणैः'। राम यानी- ज्ञान और विवेक की पराकाष्ठा, बुद्धया बृहस्पतेः तुल्यः। राम यानी- कोमलता में दृढ़ता, 'मृदुपूर्वं च भाषते'। राम यानी- कृतज्ञता का सर्वोच्च उदाहरण, 'कदाचन नोपकारेण, कृतिनैकेन तुष्यति।' राम यानी- श्रेष्ठ संगति का चयन, शील वृद्धैः ज्ञान वृद्धैः वयो वृद्धैः च सज्जनैः। राम यानी- विनम्रता में महाबल, वीर्यवान्न च वीर्येण, महता स्वेन विस्मितः। राम यानी- सत्य का अडिग संकल्प, 'न च अनृत कथो विद्वान् '। राम यानी- जागरूक, अनुशासित और निष्कपट मन, 'निस्तन्द्रिः अप्रमत्तः च, स्व दोष पर दोष वित।'

जंबुरी : प्राकृतिक सुंदरता के बीच रोमांच का अनुभव

पर्यटकों ने नीमगांव, मयाली नेचर कैम्प, विश्व का सबसे बड़ा प्राकृतिक शिवलिंग मधेश्वर पहाड़, सारूडीह चाय बगान जिला संग्रहालय, सरना एथेनिक रिजॉर्ट का किया अवलोकन

जशपुर जम्बुरी के दूसरे दिन सुबह सूरज उगने से पहले ही 120 पर्यटकों ने अपना सफर नीमगाँव से शुरू किया जहाँ प्रतिभागी शांत और मनमोहक पक्षी–दर्शन सत्र में शामिल हुए। सुनहरी धुंध से ढकी वादियों में जब पक्षियों की चहचहाहट गूंजी, तो पूरा जंगल जीवन से भर उठा। यह एक सुकूनभरी शुरुआत थी, जिसने सभी को जशपुर की शांत और प्राकृतिक लय से जोड़ दिया।

नाश्ते के बाद प्रतिभागियों को दिनभर की रोमांचक यात्राओं के लिए दो समूहों में बाँटा गया।

पहला समूह रवाना हुआ मयाली की ओर, जो पवित्र मधेश्वर पर्वत की तलहटी में बसा है कृ जो प्राकृतिक रूप से शिवलिंग का सबसे विशाल स्वरूप है। इस आध्यात्मिक वातावरण में दिनभर का रोमांच और भी खास बन गया। मयाली के नीले पानी में प्रतिभागियों ने कयाकिंग, एक्वा साइक्लिंग, एटीवी राइड्स और जोशीले पेंटबॉल गेम जैसे कई साहसिक खेलों का आनंद लिया। आसमान में उड़ते पैरामोटर और हॉट एयर बलून से मधेश्वर पर्वत और हरे–भरे जंगलों का विहंगम दृश्य सभी को मंत्रमुग्ध कर गया। रोमांच के बाद, स्थानीय व्यंजनों से सजे दोपहर के भोजन ने सबके दिन को और भी स्वादिष्ट बना दिया।

वहीं, दूसरा समूह देश देखा में रहा, जहाँ दिनभर के लिए खुला आसमान और पथरीला भूभाग रोमांच का नया अध्याय लिख रहा था। प्रतिभागियों ने यहाँ बोल्डरिंग, रॉक क्लाइम्बिंग, जुमारिंग और ज़िपलाइनिंग जैसी गतिविधियों में भाग लिया। हर चुनौती के साथ जोश, हौसला और टीम भावना की गूंज चारों ओर सुनाई दे रही थी। दोपहर के भोजन के बाद यह समूह , सारूडीह चाय बगान, रानीदाह और जशपुर संग्रहालय की सैर पर निकला, जहाँ उन्होंने जशपुर की कला, इतिहास और प्राकृतिक धरोहर को करीब से जाना।

शाम होते–होते यह समूह पहुँचा सरना एथनिक रिज़ॉर्ट, जहाँ रात की रौनक बढ़ी एक सुंदर आदिवासी सांस्कृतिक कार्यक्रम से। जशपुर की महिला स्वसहायता समूहों ने अपने पारंपरिक नृत्य और लोकगीतों से सबका मन मोह लिया। उनके रंगीन परिधान, ताल और ऊर्जा ने जशपुर की असली आत्मा को मंच पर जीवंत कर दिया।

कार्यक्रम समाप्त होने के बाद दोनों समूह फिर से देश देखा में एकजुट हुए। सितारों से भरे आसमान के नीचे जलती कैम्प फायर की गर्माहट ने सबको एक साथ ला दिया। हंसी–मजाक, अनुभवों की बातें और शांत तारामंडल दर्शन ने इस रोमांचक दिन का समापन बेहद खूबसूरती से किया।

लाख पालन बना ग्रामीण समृद्धि का आधार किसानों की आमदनी में आई क्रांतिकारी बढ़ोतरी

वनमंडल की पहल से पलाश पेड़ बने आजीविका का स्तंभ, 37 गाँवों के 400 किसान जुड़े

छत्तीसगढ़ में पलाश पेड़ों की भरमार है। पलाश पेड़ जिसे छत्तीसगढ़ी में परसा कहा जाता है, वो खेतों के मेड़ों में अक्सर पाए जाते हैं। इसके बावजूद इसका कोई व्यावसायिक उपयोग नहीं हो पा रहा था। परंतु अब मनेंद्रगढ़ वनमंडल ने इस दिशा में एक अनूठी पहल की है। पलाश के पेड़ लाख पालन के लिए अत्यंत उपयुक्त होते हैं क्योंकि इनमें रंगीनी लाख का पालन किया जा सकता है। अगर इन पलाश के पेड़ों का वैज्ञानिक तरीके से उपयोग किया जाए, तो यह किसानों को खेती के अलावा अतिरिक्त आय का साधन प्रदान कर सकता है।

लाख पालन से बदलती ग्रामीण अर्थव्यवस्था

मनेंद्रगढ़ जिले के गांवों में पलाश पेड़ों की पर्याप्त उपलब्धता है। यहां पूर्व में लाख पालन कार्य होता रहा है, लेकिन समय के साथ मौसम की प्रतिकूलता और वैज्ञानिक पद्धतियों के अभाव में यह कार्य बंद हो गया था। ग्रामीणों से चर्चा करने पर ग्राम भौता, नारायणपुर, छिपछिपी और बुंदेली के कृषकों ने लाख पालन के प्रति गहरी उत्सुकता दिखाई। इस उत्साह को देखते हुए अक्टूबर-नवंबर 2023-24 में पहली बार भौता समिति के अंतर्गत भौता, नारायणपुर, छिपछिपी और बुंदेली गांवों में तथा जनकपुर के चांटी और जरडोल गांव के आसपास के क्षेत्रों में 34 कृषकों को 2.54 क्विंटल लाख बीहन (बीज) वितरित किए गए, जिनका 276 पेड़ों में संचरण कराया गया। इसके पश्चात जून-जुलाई 2024-25 में भौता और बेलबहरा समितियों के तीन ग्रामों में 0.74 क्विंटल बीहन 4 कृषकों के 80 पेड़ों में लगवाया गया।

जिले की हर गांव में फैल रही लाख की लहर

अक्टूबर 2024-25 में 5 प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों ने भौता, बेलबहरा, माड़ीसरई, जनकपुर और जनुवा के अंतर्गत 9 ग्रामों के 126 कृषकों ने 3117 पलाश पेड़ों में बीहन लाख का संचरण किया। इसके

बाद जुलाई 2025 में 10 प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों के 27 ग्रामों के 205 कृषकों द्वारा 2037 पलाश पेड़ों में 25.50 क्विंटल बीहन लाख का संचरण किया गया, जिसमें से 20.45 क्विंटल बीहन लाख जिले के ही कृषकों द्वारा उत्पादित किया गया, जबकि शेष 4.05 क्विंटल बलरामपुर से लाया गया। अक्टूबर 2025 तक यह प्रयास और बड़ा रूप ले चुका था, अब 37 ग्रामों के 400 कृषकों ने कुल 6 हजार पेड़ों में 60 क्विंटल बीहन लाख का संचरण किया। गौर करने योग्य बात यह है कि इस बार संपूर्ण बीहन लाख का उत्पादन मनेंद्रगढ़ के ही किसानों ने किया।

मनेंद्रगढ़ बनेगा छत्तीसगढ़ का लाख हब

इस अभियान का लक्ष्य हर वर्ष उत्पादन को तीन गुना बढ़ाना है, जिससे अगले वर्ष तक यह पूरे ज़िले में फैल जाएगा। लाख पालन की सबसे बड़ी चुनौती बीहन लाख की उपलब्धता होती है, क्योंकि इसे दूसरे क्षेत्रों से लाकर लगाना कठिन कार्य है। लेकिन जिस गति से मनेंद्रगढ़ लाख उत्पादन में आगे बढ़ रहा है, भविष्य में यह संभव है कि पूरे छत्तीसगढ़ को बीहन लाख की सप्लाई यहीं से हो। वर्तमान में लाख उत्पादन में झारखंड पहले और छत्तीसगढ़ दूसरे स्थान पर है, वहीं छत्तीसगढ़ में मनेंद्रगढ़ जिला इस क्षेत्र में पहले स्थान पर है।

लाख से बढ़ता मुनाफा और आत्मनिर्भर किसान

अगर इसका कॉस्ट- बेनिफिट एनालिसिस देखा जाए, तो जितना लाख बीज के रूप में पेड़ों में लगाया जाता है, उसका लगभग 2.5 गुना तक उत्पादन हो जाता है। इसका मतलब है कि किसानों को लगभग डेढ़ गुना का शुद्ध लाभ प्राप्त होता है। कई किसान इस पहल से 30 से 40 हजार रुपये तक की अतिरिक्त आय अर्जित कर रहे हैं।

सफलता की मिसाल बनी - केस स्टडी

प्राथमिक वनोपज सहकारी समिति भौता के ग्राम छिपछिपी के कृषक सर्वजीत सिंह ने 2023 के अक्टूबर-नवंबर में 40 किलो बीहन 45 वृक्षों में लगाया, जिसकी लागत 10,000 रुपए थी। 2024 के अक्टूबर-नवंबर में उन्होंने 150 किलो बीहन लाख 37,500 रुपए में बेचा और 2025 के जुलाई में 125 किलो लाख 31,250 रुपये में बेचा। दो साल में उनका कुल नेट प्रॉफिट 58,000 रुपए रहा। इसी प्रकार समिति भौता के ग्राम नारायणपुर के कृषक उदयनारायण ने 2024 के अक्टूबर-नवंबर में 60 किलो बीहन 70 वृक्षों में 15,000 रुपये की लागत से लगाया और 2025 के जुलाई में 150 किलो बीहन लाख 37,500 रुपये में विक्रय किया। एक वर्ष में ही उन्होंने 22,500 रुपए का नेट प्रॉफिट कमाया।

नियद नेल्लानार योजना : दूरस्थ अंचलों में पहुंची स्वास्थ्य सेवाएं

चिंतलनार-बुरकापाल के ग्रामीणों को मिली निःशुल्क इलाज व आयुष्मान कार्ड की सुविधा

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की परिकल्पना के अनुसार स्वास्थ्य सेवाओं को जिले के सबसे दुर्गम कोनों तक पहुंचाने की अपनी प्रतिबद्धता को 'नियद नेल्लानार योजना' के तहत पूरा किया जा रहा है। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल के निर्देश पर घने जंगलों के बीच बसे सुकमा जिले के कोंटा ब्लॉक के चिंतलनार और बुरकापाल जैसे पहुंचविहीन क्षेत्रों में तीन दिवसीय विशाल स्वास्थ्य शिविर का सफल आयोजन किया गया। घने जंगलों के बीच पेड़ की छांव में सजे इस शिविर में वह स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचीं, जिनसे यह अंचल अब तक वंचित था। यह शिविर ग्रामीणों के लिए दोहरी सौगात लेकर आया, जहाँ उन्हें तत्काल इलाज की सुविधा मिली।

दूरस्थ अंचलों में पहुंची स्वास्थ्य सेवाएं

कलेक्टर श्री देवेश कुमार ध्रुव की अगुवाई में विकासखंड चिकित्सा अधिकारी कोंटा डॉ. दीपेश चंद्राकर ने तीन दिन तक शिविर लगाकर चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों की टीम के साथ मोर्चा संभाला। घने जंगलों के बीच, पेड़ की छांव में ही ग्रामीणों की स्वास्थ्य जांच की गई, उनका उपचार किया गया और आवश्यकता अनुसार नि:शुल्क दवाइयों का वितरण किया गया। शिविर में ग्रामीणों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

स्वास्थ्य के साथ मिला 'आयुष्मान' का भरोसा

इस शिविर का एक बड़ा लाभ यह रहा कि स्वास्थ्य सेवाओं के साथ-साथ प्रशासन की टीम ने मौके पर ही 162 ग्रामीणों के नवीन आयुष्मान कार्ड भी बनाए। कुछ ग्रामीणों को आयुष्मान कार्ड का वितरण भी किया गया। ये कार्ड इन ग्रामीणों को भविष्य में गंभीर बीमारियों के लिए भी नि:शुल्क उपचार का लाभ प्राप्त करने में मदद करेंगे।

इस पहल से उन ग्रामीणों को बड़ी राहत मिली है, जो अब तक बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं से दूर थे। ग्रामीणों ने इस प्रयास की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस तरह के शिविरों से उन्हें अपने स्वास्थ्य की जांच कराने और सरकारी योजनाओं का लाभ लेने का एक सुनहरा अवसर मिला है।

टमाटर की खेती से किसान बन रहे आत्मनिर्भर

टमाटर की खेती से हो रहा लाभ

शासन की किसान हितैषी योजनाओं एवं उद्यानिकी फसलों की असीम संभावनाओं के कारण अब राजनांदगांव जिले के किसान पारंपरिक फसलों के साथ-साथ उद्यानिकी फसलों की ओर तेजी से अग्रसर हो रहे हैं। इसी कड़ी में विकासखण्ड राजनांदगांव के ग्राम गातापारखुर्द के प्रगतिशील किसान श्री सुरेश सिन्हा ने आधुनिक पद्धति से पॉलीहाउस में टमाटर की खेती कर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। उन्होंने टमाटर की 'माल्या वैरायटी' की फसल लगाकर लगभग 2 लाख 35 हजार रूपए का लाभ अर्जित किया है।

श्री सिन्हा ने बताया कि पॉलीहाउस में उपयुक्त तापमान बनाए रखते हुए मल्चिंग विधि का उपयोग किया गया, जिससे फसल की गुणवत्ता और उत्पादन दोनों में वृद्धि हुई। टमाटर की बाजार में अच्छी मांग होने से प्रति क्विंटल 700 से 800 रूपए की दर प्राप्त हुई। यहां उत्पादित टमाटर कोरबा, कोलकाता, उत्तर प्रदेश, ओडिशा सहित स्थानीय बाजारों में भी भेजा जा रहा है।

उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अंतर्गत संरक्षित खेती के लिए पॉलीहाउस निर्माण हेतु 17 लाख रूपए का शासन द्वारा अनुदान प्राप्त हुआ। पॉलीहाउस की कुल लागत 34 लाख रूपए रही। इसके अतिरिक्त पैक हाउस निर्माण हेतु 2 लाख रूपए का अनुदान तथा दवाई छिड़काव के लिए स्ट्रिप मशीन पर 50 प्रतिशत अनुदान शासन द्वारा प्रदान किया गया।

श्री सिन्हा के पास कुल 15 एकड़ कृषि भूमि है, जिसमें से 8 एकड़ में धान एवं 7 एकड़ में सब्जियों की खेती की जा रही है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष 1.5 एकड़ में लौकी की फसल से लगभग 35 टन उत्पादन हुआ, जिससे उन्हें 50 प्रतिशत की शुद्ध आमदनी प्राप्त हुई। पॉलीहाउस में टमाटर के साथ खाली स्थान का उपयोग करते हुए उन्होंने मिश्रित खेती के रूप में फूलगोभी, नवलकोल, प्याज और मूली की फसलें भी लगाई हैं।

श्री सिन्हा ने बताया कि धान की तुलना में सब्जियों की खेती से तीन से चार गुना अधिक आमदनी होती है। इसमें कम पानी की आवश्यकता होती है और एक वर्ष में तीन से चार फसलें ली जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि उद्यानिकी विभाग से समय-समय पर तकनीकी मार्गदर्शन एवं परामर्श प्राप्त होता रहता है, जिससे खेती में नई तकनीकों का लाभ मिल रहा है।

प्रधानमंत्री आवास योजना ने बदला जीवन

सुन्नम बद्री का सपना हुआ पूरा, मिला पक्का मकान

छत्तीसगढ़ के सुकमा जिला, जो घने जंगलों और नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के लिए जाना जाता है, अब विकास और बदलाव की नई कहानी लिख रहा है। यह कहानी है कोंटा विकासखंड के दूरस्थ ग्राम पंचायत मेहता की रहने वाली सुन्नम बद्री की, जिन्होंने सरकारी योजनाओं की मदद से अपने कच्चे झोपड़ी जैसे घर को एक सुंदर पक्के मकान में बदल दिया।

संघर्षों से भरा था जीवन

श्रीमती बद्री पहले मिट्टी और फूस से बनी झोपड़ी में अपने परिवार के साथ रहती थीं। बरसात के दिनों में छत टपकती थी और गर्मी में दीवारें दरक जाती थीं। ऐसे हालात में बच्चों की देखभाल और घर चलाना बहुत मुश्किल था। गाँव की दूरस्थ स्थिति के कारण निर्माण सामग्री पहुँचाना भी एक बड़ी चुनौती थी।

योजना बनी जीवन की रोशनी

वर्ष 2024-25 में प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत शुरू की गई 'नियद नेल्ला नार योजना' (स्थानीय गोंडी भाषा में जिसका अर्थ है 'आपका अच्छा घर') ने उनके जीवन में नई उम्मीद जगाई। योजना के तहत उन्हें पक्का घर बनाने की स्वीकृति मिली। पंचायत प्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों और ग्रामीणों के सहयोग से तमाम कठिनाईयों के बावजूद उनका घर बनकर तैयार हुआ।

गृहप्रवेश का खुशी भरा दिन

1 नवम्बर 2025 का दिन श्रीमती बद्री के जीवन का सबसे यादगार दिन बन गया। जब उन्होंने अपने नए पक्के घर में गृहप्रवेश किया, तो उनकी आँखों में खुशी के आँसू थे। अब उनका परिवार सुरक्षित और सम्मानजनक घर में रह रहा है।

'नियद नेल्ला नार योजना' बन रही मिसाल

यह योजना केवल घर बनाने की पहल नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण और जीवन स्तर सुधार की दिशा में एक बड़ा कदम है। इस योजना ने यह साबित किया है कि अब विकास की किरण जंगलों और दुर्गम इलाकों तक पहुँच रही है। प्रशासन की भूमिका रही सराहनीय रही सुकमा कलेक्टर ने बताया कि 'नियद नेल्ला नार योजना' के तहत प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) का क्रियान्वयन सुकमा के दूरस्थ इलाकों में भी सफलतापूर्वक किया जा रहा है। लगातार पात्र हितग्राहियों को पक्के घर स्वीकृत किए जा रहे हैं, जिससे उनका जीवन स्तर बेहतर हो रहा है।

जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने कहा कि मेहता जैसे अंदरूनी गांव में योजना का सफल क्रियान्वयन केवल निर्माण कार्य नहीं, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन की मिसाल है। श्रीमती बद्री का घर यह प्रमाण है कि जब प्रशासन, पंचायत और जनता मिलकर काम करते हैं, तब असंभव भी संभव हो जाता है।

सपनों का घर बना प्रेरणा का प्रतीक

आज सुन्नम बद्री का यह घर सिर्फ ईंट और गारे का ढांचा नहीं, बल्कि उनके सपनों, संघर्ष और उम्मीदों की मजबूत नींव पर खड़ा एक प्रतीक है जो यह संदेश देता है कि सरकारी योजनाएँ जब सही नीयत और सहभागिता से लागू होती हैं, तो लोगों का जीवन सच में बदल जाता है।

शिक्षा और सड़क से खुलेगा विकास का रास्ता

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल ने उदयपुर में हायर सेकेंडरी स्कूल भवन और दो सड़कों के निर्माण कार्यों का किया भूमि पूजन, ग्रामीण बोले - अब हमारे गांव में भी पहुंची विकास की रोशनी

सरगुजा जिले के उदयपुर विकासखण्ड में विकास के नए अध्याय की शुरुआत हुई, जब पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री राजेश अग्रवाल के कर-कमलों से एक साथ कई महत्वपूर्ण निर्माण कार्यों का भूमि पूजन संपन्न हुआ। समारोह में ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और मंत्री श्री अग्रवाल का पारंपरिक स्वागत कर जनकल्याण के इन कार्यों के लिए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मंत्री श्री अग्रवाल ने उदयपुर में हायर सेकेंडरी स्कूल भवन के निर्माण कार्य का शुभारंभ किया, जिसकी स्वीकृत राशि 121.16 लाख रुपये है। स्कूल भवन के निर्माण से सैकड़ों विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलेगी और उन्हें शिक्षा के लिए अन्य कस्बों में नहीं जाना पड़ेगा।

विकासखण्ड उदयपुर में 3.65 किमी लंबी सूरजपुर से सरगवां-केशगंवा मार्ग का निर्माण 500.77 लाख रुपये की लागत से और 5.15 किमी खरसुरा से फूलचूही (डोई) मार्ग का निर्माण 658.11 लाख रुपये की लागत से किया जाएगा। इन सड़कों के निर्माण से आसपास के गांवों में आवागमन सुगम होगा, किसानों को बाजार तक पहुंचने में सुविधा होगी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

क्षेत्र के लोगों ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि स्कूल और सड़क के बन जाने से हमें बहुत फायदा होगा। हमारे बच्चे भी अब अच्छी शिक्षा पाएंगे और उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए दूसरी जगह नहीं जाना पड़ेगा। सड़क बन जाने से फसल को बाजार तक ले जाना आसान होगा, समय और खर्च दोनों की बचत होगी।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि 'सरकार का लक्ष्य है कि हर गांव में शिक्षा, सड़क और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाएं हों। विकास केवल निर्माण में नहीं, बल्कि हर नागरिक के जीवन-स्तर के उत्थान में दिखना चाहिए। हमारा प्रयास हैं कि सरगुजा प्रदेश का एक आदर्श अंचल बने, जहाँ शिक्षा, संस्कृति और पर्यटन साथ मिलकर प्रगति का मार्ग प्रशस्त करें।' श्री अग्रवाल ने आगे कहा कि राज्य सरकार सरगुजा अंचल के साथ-साथ पूरे छत्तीसगढ़ में शिक्षा के साथ-साथ पर्यटन और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण के लिए भी ठोस पहल कर रही है। आने वाले दिनों में सरगुजा के क्षेत्रों में ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन देने, स्थानीय कला एवं हस्तशिल्प को बढ़ावा देने तथा युवाओं के लिए रोजगारन्मुखी गतिविधियों की शुरुआत की जाएगी। उन्होंने कहा कि सरगुजा के विकास का मार्ग जनसहयोग से और भी मजबूत होगा।

संघर्ष को बनाया ताकत -

किराना व्यवसाय से बदली जिंदगी

संकल्प, आत्मविश्वास और अवसर का सही उपयोग इन तीनों ने दंतेवाड़ा जिले के ग्राम कुआकोण्डा पुजारीपारा की कुमारी यशोदा नाग की जिंदगी बदल दी। परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों का बोझ, सीमित शैक्षणिक संसाधन और बेरोज़गारी जैसी चुनौतियों के बीच यशोदा ने हार नहीं मानी। जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास समिति की आदिवासी महिला सशक्तिकरण योजना ने उनके जीवन में नई उम्मीद और आत्मनिर्भरता की राह खोली। आज यशोदा अपने किराना व्यवसाय से प्रतिमाह 7,000 से 10,000 रुपये की आमदनी अर्जित कर अपने परिवार का सहारा बन चुकी हैं।

यशोदा नाग बताती हैं कि वर्ष 2023-24 से पूर्व उनके सामने भविष्य को लेकर गहरी अनिश्चितता थी। पिता स्वर्गवासी होने के बाद परिवार की संपूर्ण जिम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई। मां और दो छोटे भाई-बहनों की पढ़ाई से लेकर घर-परिवार के संचालन तक, सभी दायित्व उन्हें निभाने थे। परिस्थितियों के कारण वे केवल 12वीं तक ही शिक्षा प्राप्त कर सकीं। नौकरी की अनेक कोशिशों के बावजूद उन्हें सफलता नहीं मिली, परंतु उन्होंने उम्मीद का दामन नहीं छोड़ा।

इसी दौरान उन्होंने आदिवासी महिला सशक्तिकरण योजना के बारे में जानकारी हासिल की। जिला समिति दंतेवाड़ा में आवश्यक दस्तावेज जमा कर उन्होंने इस योजना का लाभ प्राप्त किया। योजना के अंतर्गत उन्हें 2 लाख रुपये का ऋण उपलब्ध कराया गया, जिससे उन्होंने किराना दुकान प्रारंभ की। आज यह दुकान उनकी आजीविका का स्थायी स्रोत है। यशोदा बताती हैं कि उन्हें ऋण की किश्तें जमा करने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती और व्यवसाय निरंतर प्रगति कर रहा है।

वे बताती हैं ‘इस व्यवसाय ने मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारी है। आज मैं स्वयं के पैरों पर खड़ी हूँ और अपने परिवार का सहारा बन चुकी हूँ। यह उपलब्धि मेरे लिए गर्व और संतोष का विषय है। शासन की इस योजना ने मुझे नया जीवन दिया है।‘

श्रद्धा और सौंदर्य का संगम - सिरौली मेला की गाथा

मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले का सिरौली ग्राम हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर श्रद्धा, संस्कृति और सौंदर्य का अद्भुत संगम बन जाता है। यहां स्थित दक्षिणामुखी संकट मोचन हनुमान मंदिर न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि एक ऐसा स्थान भी है जहां इतिहास, किवदंती और लोकविश्वास एक सूत्र में गुंथे हैं। तीन दिवसीय सिरौली मेला का आरंभ होते ही पूरे क्षेत्र में भक्ति का वातावरण व्याप्त हो जाता है।

जंगल की गोद से निकली आस्था की ज्योति

इतिहासकार एवं जिला पर्यटन नोडल अधिकारी डॉ. विनोद पांडेय बताते हैं कि सिरौली मंदिर का उद्भव किसी स्थापत्य योजना से नहीं, बल्कि एक अनोखी दैवी प्रेरणा से हुआ। कहा जाता है कि लगभग सन 1924-25 से पूर्व यह इलाका घने जंगलों से घिरा था। स्थानीय गोवाहिकों को एक दिन जंगल के भीतर एक दिव्य प्रतिमा के दर्शन हुए। यह बात तत्कालीन कोरिया नरेश श्री रामानुज प्रताप सिंहदेव तक पहुंची। नरेश स्वयं अपने सेवकों के साथ इस रहस्यमयी स्थल पर आए। उन्होंने वृक्षों की सफाई कर प्रतिमा को खुदवाने का आदेश दिया, किंतु प्रतिमा का दाहिना पैर अनंत गहराई में धंसा हुआ था। रात में नरेश को स्वप्न में आदेश प्राप्त हुआ - 'हनुमान जी की प्रतिमा को यहां पूजो, इसे कहीं और न ले जाओ।'

इस दैवी संकेत के बाद विक्रम संवत 2016 (1924-25 ई.) में दक्षिणमुखी हनुमान मंदिर की स्थापना की गई। मंदिर के प्रथम महंत स्वर्गीय नीलकंठ शुक्ल महाराज रहे। तभी से कार्तिक पूर्णिमा पर मेले की परंपरा प्रारंभ हुई, जो आज तक निरंतर जारी है।

मेले में उमड़ती श्रद्धा और उल्लास की लहर

हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा के दिन सिरौली का यह पावन स्थल श्रद्धालुओं से भर उठता है। दूर-दराज़ के गांवों से लोग पैदल, वाहन या बैलगाड़ी से यहां पहुंचते हैं। मंदिर परिसर में हनुमान जी के दर्शन, पूजा-अर्चना और मन्नतें मांगने वालों की भीड़ उमड़ती है। स्थानीय श्रद्धालु परंपरा के अनुसार भंडारे का आयोजन करते हैं।

मेला प्रांगण में झूले, खिलौनों की दुकानें, पूजा सामग्री, हस्तशिल्प, और खानपान के ठेले पूरे वातावरण को रंगीन बना देते हैं। बच्चों की हंसी और शंख-घंटियों की ध्वनि के बीच आस्था की यह महक सिरौली को एक जीवंत लोक उत्सव में बदल देती है।

प्रकृति की गोद में बसा यह तीर्थ

मंदिर से मात्र 50-60 मीटर दूरी पर हसदो नदी कलकल बहती है, जो स्थल को और अधिक पवित्र बनाती है। वहीं लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित उदलकछार जलप्रपात अपनी श्वेतधारा से पर्यटकों को मोह लेता है। श्रद्धा के साथ-साथ प्रकृति की यह सुषमा सिरौली को आध्यात्मिक और पर्यटन - दोनों दृष्टियों से विशिष्ट बनाती है।

लोक परंपरा की जीवंत धरोहर

सिरौली मेला केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि यह हमारी लोक संस्कृति, सामाजिक एकता और ऐतिहासिक चेतना का प्रतीक है। एक सदी से अधिक समय से यह मेला निरंतर लोगों को जोड़ता आया है - पीढ़ी दर पीढ़ी भक्ति और परंपरा की यह ज्योति आज भी समान तेज से प्रज्वलित है। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर सिरौली की यह पवित्र भूमि आज भी यही संदेश देती है। 'जहां आस्था है, वहीं संस्कृति जीवित है।'

युवाओं को निफ्टेम विशेषज्ञों ने दिया प्रशिक्षण

जशपुर जिले में युवाओं को मोटा अनाज से तैयार होने वाले वैल्यू-एडेड खाद्य उत्पादों की ट्रेनिंग दी गई। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य युवाओं को रोजगार और उद्यमिता से जोड़ते हुए किसानों की आमदनी बढ़ाना और गांवों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

यह विशेष प्रशिक्षण निफ्टेम, कुंडली (सोनीपत, हरियाणा) के ग्राम अंगीकरण कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर प्रसन्ना कुमार जी.वी. और श्री अभिमन्यु गौड़ के मार्गदर्शन में हुआ। प्रशिक्षण जशपुर नगर के महुआ सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में आयोजित किया गया, जिसमें एनईएस कॉलेज जशपुर के 25 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम में युवाओं को नानखटाई, कपकेक और न्यूट्री-बार जैसे मोटा अनाज आधारित स्वादिष्ट और पोषक उत्पाद बनाने की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दी गई। इसके साथ ही उन्हें आधुनिक तकनीक, प्रोसेसिंग के तरीके और छोटे व्यवसाय शुरू करने के लिए जरूरी जानकारी भी प्रदान की गई। युवाओं को यह बताया गया कि कैसे मोटे और कच्चे अनाज को बाजार में बिकने वाले उच्च गुणवत्ता के उत्पादों में बदला जा सकता है।

प्रोफेसर प्रसन्ना कुमार ने युवाओं को मोटा अनाज के नए-नए उत्पाद विकसित करने और पारंपरिक तरीकों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि सरकारी योजनाओं के जरिए मिलने वाली फंडिंग, ब्रांडिंग और मार्केटिंग सपोर्ट का उपयोग करके ये युवा बड़े स्तर पर उत्पादन शुरू कर सकते हैं। निफ्टेम का लक्ष्य है कि ग्रामीण युवा खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में नए उद्यमी बनें और गांवों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं।

जशपुर जिले में चावल की खेती ज्यादातर वर्षा पर निर्भर रहती है, जबकि बाजरा कम पानी में भी अच्छी फसल देता है। इसी वजह से बाजरा और महुआ को भविष्य की टिकाऊ खाद्य व्यवस्था में अहम माना जा रहा है। जशपुर में जय जंगल फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी 'जशप्योर' ब्रांड नाम से बाजरा और महुआ के कई उत्पाद तैयार कर रही है। वहीं 'जावा फूल' और 'जीराफूल' जैसे स्थानीय चावल की बिक्री ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से होने लगी है।

विशेषज्ञों ने बताया कि मोटा अनाज और महुआ जैसे स्थानीय संसाधन न सिर्फ पोषण बढ़ाते हैं, बल्कि गांवों में आजीविका के नए अवसर भी पैदा करते हैं। प्रशिक्षण के बाद कई युवाओं ने कहा कि वे इन कौशलों का उपयोग अपने समुदाय के हित में करना चाहते हैं। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के मिशन और जय जंगल फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित हुआ।

'तेरे इश्क में' धनुष-कृति सेनन की परफॉर्मेंस शानदार

बॉलीवुड एक्टर कृति सेनन और साउथ स्टार धनुष की फिल्म तेरे इश्क में 28 नवंबर को सिनेमाघरों में दस्तक दे चुकी है। फैंस बेसब्री से इस रोमांटिक ड्रामा फिल्म की रिलीज का इंतजार रहे थे जो आज थिएटर्स में मूवी का लुत्फ उठा रहे हैं। टीजर और फिर ट्रेलर ने फिल्म को लेकर पहले ही जबरदस्त हाइप बना दी थी। खास बात है कि इस मूवी से धनुष ने लंबे समय बाद हिंदी सिनेमा में वापसी की है। फिल्म का डायरेक्शन आनंद एल राय ने किया है।

'तेरे इश्क में' साल 2025 की मोस्ट अवेटेड फिल्मों में से एक है। फिल्म की रिलीज के बाद सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर भी मूवी को लेकर रिव्यूज आने लगे हैं। सभी ने 'तेरे इश्क में' की तारीफ में कसीदे पढ़े हैं। धनुष और कृति सेनन की परफॉर्मेंस की भी खूब तारीफ हो रही है। चलिए जानते हैं कि 'तेरे इश्क में' को लेकर लोगों ने सोशल मीडिया पर क्या लिखा है।

धनुष और कृति सेनन की शानदार परफॉर्मेंस

धनुष और कृति सेनन की फिल्म का रिव्यूज करते हुए एक यूजर ने लिखा, 'धनुष और कृति सेनन ने शानदार परफॉर्मेंस दी है। शानदार रोमांटिक दर्दभरी कहानी। पैसा वसूल मूवी'। दूसरे ने लिखा, 'क्या डायलॉग है, क्या केमिस्ट्री है। धनुष और कृति सेनन की तेरे इश्क में रिलीज हो गई है इसे अपने पास के सिनेमाघरों में देख सकते हैं।' तीसरे ने लिखा, 'थलाइवा धनुष। तेरे तेरे इश्क में को मिस मत करिए।'

यूजर्स ने बताया साल 2025 की बेस्ट फिल्म

एक और यूजर ने लिखा, 'याद रखिएगा तेरे इश्क में साल 2025 की बेस्ट फिल्म होने वाली है। फिल्म की टीम को मेरी शुभकामनाएं।' वहीं, एक यूजर ने कहा कि यह फिल्म रुला देगी। लिखा कि 'थलाइवा तेरे इश्क को मिस मत करिएगा। यह फिल्म हंसाएगी, आपको इससे प्यार हो जाएगा और यह आपको रुलाएगी भी। प्योर सोल मूवी।'

हिंदी और तमिल में रिलीज हुई मूवी

बताते चलें कि आनंद एल राय के डायरेक्शन में बनी 'तेरे इश्क में' को हिमांशु शर्मा, भूषण कुमार और कृष्ण कुमार ने प्रोड्यूस किया है। इसे हिंदी के साथ-साथ तमिल भाषा में भी रिलीज हुई है क्योंकि धनुष तमिल सिनेमा के स्टार हैं। रिपोर्ट्स की मानें तो रिलीज से पहले ही 'तेरे इश्क में' ने एडवांस बुकिंग में ही 5.65 करोड़ रुपये का बिजनेस कर लिया था। ट्रेड एक्सपर्ट्स का मानना है कि धनुष और कृति सेनन की यह फिल्म पहले दिन डबल डिजिट में बिजनेस करेगी।

टीवी पर मचाया धमाल, अब 'भाबीजी घर पर हैं' करेगा थिएटर में कमाल

पिछले एक दशक से भी ज्यादा समय से 'भाबीजी घर पर हैं' भारत का सबसे प्यारा कॉमेडी शो बना हुआ है। आसिफ शेख, रोहिताश गौर, शुभांगी अत्रे और बाकी कलाकारों ने अपने आइकॉनिक किरदारों से करोड़ों दिल जीते हैं। विभूति जी का चार्म, तिवारी जी का ड्रामा, अंगूरी भाभी का 'सही पकड़े हैं', अनीता भाभी की कॉन्फिडेंट सॉफिस्टिकेशन और सक्सेना जी की 'आई लाइक इट' वाली पागलपन भरी कॉमेडी ने हर उम्र के दर्शकों को हंसाते-हंसाते लोटपोट कर दिया। देश के सबसे लंबे समय तक चलने वाले और सबसे चहेते टीवी शोज में से एक होने के नाते, इसका दर्शकों से जुड़ाव हर साल और गहरा होता गया है।

जल्द आएगी भाबी जी फिल्म

अब भारतीय टेलीविजन के इतिहास में पहली बार कोई टीवी पर चल रहा सीरियल, सिनेमा के पर्दे पर उतरने जा रहा है। जी सिनेमा और जी स्टूडियोज लेकर आ रहे हैं- 'भाबीजी घर पर हैं फन ऑन द रन' फिल्म, जो 6 फरवरी 2026 को थिएटर्स में रिलीज होगी। ये फिल्म आपके चहेते किरदारों को बड़े पर्दे पर एक धमाकेदार, हंसी से भरपूर एडवेंचर में लेकर आएगी। साथ ही उस कॉमेडी यूनिवर्स को और बड़ा करेगी जिसे लाखों-करोड़ों लोग प्यार करते हैं।

मौजूदा कलाकारों के साथ जुड़ रहे हैं हिंदी बेल्ट के तीन सबसे धमाकेदार कलाकार- रवि किशन, मुकेश तिवारी और निरहुआ, जिनकी बेमिसाल एनर्जी और सहज हास्य इस कॉमेडी एडवेंचर को बिल्कुल नए लेवल पर ले जाएगा। तो तैयार हो जाइए ढेर सारी खलबली, बेइंतहा हंसी और पूरी तरह लोटपोट करने के लिए। 'भाबीजी घर पर हैं फन ऑन द रन' को जी सिनेमा ने प्रोड्यूस किया है। मेकर्स ने फिल्म का ऐलान इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट के जरिए किया और लिखा, 'भाबीजी जो अब तक घर पर थीं, अब बड़े पर्दे पर आएंगी।' साथ ही इससे दो फोटोज भी शेयर की गई हैं। इस ऐलान के बाद फैंस काफी खुश हैं।

मार्च 2015 में शुरू हुआ 'भाबीजी घर पर हैं', दो पड़ोसी कपल्स- मिश्रा और तिवारी परिवार के इर्द-गिर्द घूमता है। शो में आसिफ शेख, रोहिताश गौर, शुभांगी अत्रे, विदिशा श्रीवास्तव, योगेश त्रिपाठी समेत कई कलाकार मुख्य भूमिकाओं में हैं।

कोलकाता को मिला नया गेंदबाजी कोच

टीम को आईपीएल 2026 जिताने की खाई कसम

आईपीएल–2026 से पहले सभी की नजरें इस बात पर हैं कि कौनसी टीम किस खिलाड़ी को रिटेन करेगी। इससे पहले कोलकाता नाइट राइडर्स ने अपनी कोचिंग स्टाफ में बदलाव कर दिए हैं। हाल ही में फ्रेंचाइजी ने ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज ऑलराउंडर शेन वॉटसन को टीम का सहायक कोच नियुक्त करने की जानकारी दी थी। अब टीम को एक नया गेंदबाजी कोच भी मिल गया है जो पहले इस टीम के लिए खेल भी चुका है।

कोलकाता ने साल 2024 में श्रेयस अय्यर की कप्तानी में खिताब जीता था। तब टीम के मेंटॉर गौतम गंभीर थे और चंद्रकांत पंडित टीम के कोच, भरत अरुण गेंदबाजी कोच थे। गंभीर टीम इंडिया में चले गए हैं और बाकियों को फ्रेंचाइजी ने निकाल दिया है। इस साल तीन बार की विजेता नए कोचिंग स्टाफ की भर्ती में लगी है ताकि अपना चौथा खिताब जीत सके।

इस शख्स को मिली जिम्मेदारी

कोलकाता ने शुक्रवार को नए गेंदबाजी कोच का एलान किया है। टीम ने न्यूजीलैंड के पूर्व तेज गेंदबाज टिम साउदी को अपना नया गेंदबाजी कोच नियुक्त किया है। वह इंग्लैंड की टीम के भी गेंदबाजी कोच हैं और आईपीएल में कोलकाता के लिए भी खेल चुके हैं। वह साल 2021 से 2023 तक इस टीम का हिस्सा रहे थे।

साउदी ने फ्रेंचाइजी द्वारा जारी एक बयान में बताया, ‘कोलकाता में मुझे हमेशा अपने घर जैसा लगा है। मेरे लिए यहां एक नई जिम्मेदारी के साथ लौटना मेरे लिए सम्मान की बात है। इस फ्रेंचाइजी का कल्चर शानदार है, इसके फैंस जुनूनी हैं और खिलाड़ियों का एक शानदार समूह है। मैं गेंदबाजों के साथ करीबी तौर पर काम करने और आईपीएल–2026 का खिताब दिलाने के लिए पूरी तरह से तैयार हूं।‘

ऐसा रहा है करियर

साउदी न्यूजीलैंड के सर्वकालिक महान गेंदबाजों में गिने जाते हैं। उन्होंने अपने देश के लिए कुल 107 टेस्ट, 161 वनडे और 126 टी20 खेले हैं। टेस्ट में उन्होंने 391 विकेट अपने नाम किए हैं तो वहीं वनडे में 221 विकेट चटकाए हैं। टी20 में साउदी के नाम 164 विकेट हैं। वह टी20 इंटरनेशनल में सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में दूसरे नंबर पर हैं।

जितेश शर्मा का एक गलत फैसला ने टीम को टूर्नामेंट से करा दिया बाहर

एशिया कप राइजिंग स्टार्स 2025 के सेमीफाइनल में बांग्लादेश ए के खिलाफ सुपर ओवर में मिली हार की वजह से भारतीय टीम को बाहर होना पड़ा। सांसें रोक देने वाले इस मुकाबले में भारत को कप्तान जितेश शर्मा की गलती की वजह से हार मिली। एक नहीं बल्कि दो बार उन्होंने ऐसी गलती की जिसका खामियाजा टीम को टूर्नामेंट से बाहर होकर उठाना पड़ा। बांग्लादेश की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 6 विकेट पर 194 रन बनाए थे। भारतीय टीम भी 6 विकेट पर इतने ही रन बना पाई।

भारतीय टीम बड़ी आसानी के मैच को जीतकर फाइनल का टिकट पक्का कर लेती लेकिन कप्तान जितेश शर्मा के फैसले ने उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया। मैच के दौरान उनके फैसले ने भारत के खिताब जीतने का सपना तोड़ दिया। इंडियन प्रीमियर लीग में रॉयल चैलेंजर्स की तरफ से खेलते हुए कई बार मैच बनाने वाले जितेश इस बार नाकाम रहे। कोच सुनील जोशी ने भी कप्तान को मनमानी करने से नहीं रोका और बांग्लादेश ने इसका फायदा उठाया।

जितेश का ओवर कॉन्फिडेंस पड़ा भारी

एशिया कप राइजिंग स्टार्स के सेमीफाइनल में भारत की कप्तानी करने उतरे जितेश शर्मा ने एक नहीं बल्कि मैच में दो बार गलती की और टीम का बंटाधार कर दिया। पहले बल्लेबाजी क्रम में वो आशुतोष शर्मा से पहले बल्लेबाजी करने उतरे जबकि वो बेहतर हिटर हैं। आखिर में जब विकेट गंवाया तो मैच जैसे जैसे सुपर ओवर तक पहुंचा। सुपर ओवर और भी विवादास्पद साबित हुआ क्योंकि 14 साल के तूफानी ओपनर वैभव सूर्यवंशी को बल्लेबाजी के लिए नहीं भेजा गया। पूरे टूर्नामेंट में उनकी स्ट्राइक रेट और पावर हिटिंग सबसे बेहतर रही।

वैभव सूर्यवंशी से पहले जितेश शर्मा बल्लेबाजी

करने उतरे और अतरंगी शॉट लगाकर पहली बॉल पर आउट हो गए। रामनदीप सिंह के साथ उनका मैदान पर आना किसी की समझ में नहीं आया। उनके वापस लौटने के बाद भी वैभव को नहीं भेजा गया जबकि डगआउट में उनसे बिग हिटर दूसरा कोई भी मौजूद नहीं था। अशुतोष शर्मा को भेजा गया जो पहली बॉल पर विकेट गंवा बैठे। साइडलाइन पर सूर्यवंशी को कैमरों ने निराश और हताश दिखाया, क्योंकि भारत ने हाथ में आया मौका गंवा दिया था।

जितेश ने दिया बेतुका बयान

पोस्ट–मैच प्रेजेंटेशन में जब इस फैसले के बारे में पूछा गया, तो कप्तान जितेश ने बताया कि यह फैसला उन्होंने और टीम ने मिलकर लिया था। डेथ ओवर स्पेशलिस्ट होने के नाते वो रामनदीप सिंह के साथ बल्लेबाजी करने आए और अशुतोष को इसके बाद भेजा। ये बयान किसी के गले नहीं उतर रहा क्योंकि सुपर ओवर में सिर्फ 6 बॉल खेलना होता है और डेथ ओवर में मैच प्रोग्रेस में होता है।

वैभव सूर्यवंशी ने टूर्नामेंट में 239 रन बनाए और चार पारियों में 22 छक्के लगाए हैं। भले ही उनकी कम उम्र के कारण उन्हें दबाव से बचाने की कोशिश की गई हो, लेकिन कैमरों ने सूर्यवंशी की निराशा और हताशा को कैद कर लिया, क्योंकि उन्हें अपनी टीम को जीत दिलाने का मौका नहीं मिला।

फरीदाबाद में विस्फोटक, एके-47 व दो डॉक्टरों समेत 7 गिरफ्तार

हरियाणा के फरीदाबाद जिले में जम्मू-कश्मीर पुलिस ने आतंक की बड़ी साजिश को नाकाम किया है। जम्मू-कश्मीर पुलिस को फरीदाबाद से दो एके-47 राइफल और करीब 360 किलोग्राम विस्फोटक बरामद हुआ है, जिससे हड़कंप मच गया है। इस मामले में आतंकी समेत दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। वहीं, आतंकी मुजम्मिल का एक महिला डॉक्टर के साथ कनेक्शन जोड़ा जा रहा है।

आतंकी मुजम्मिल के करीबी इमाम के घर 50 बोरे और बरामदगी

मिली जानकारी के अनुसार, फरीदाबाद में जांच के दौरान 50 बोरे और बरामद किए गए है। साथ ही खबर यह भी आ रही है कि आतंकी मुजम्मिल के करीबी इमाम के घर से यह बरामदगी हुई है। पुलिस की इस कार्रवाई से इलाके में हड़कंप मचा हुआ है। बताया गया कि पुलिस इन बोरों को पिकअप गाड़ी में भरकर ले जा रही है। यह कार्रवाई जम्मू-कश्मीर पुलिस ने अनंतनाग मेडिकल कॉलेज से गिरफ्तार दूसरे डॉक्टर से मिली जानकारी के बाद की। इससे पहले डॉ. अदील नाम के डॉक्टर के लॉकर से भी एक्र्च-47 बरामद हुई थी। जांच में सामने आया कि डॉक्टरों के बीच गहरा संपर्क था। इनके तार दक्षिण कश्मीर से लेकर हरियाणा तक फैले हुए हैं।

पुलिस ऐसे आतंकियों तक पहुंची

श्रीनगर में जम्मू-कश्मीर पुलिस को आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के पोस्टर चिपके मिले थे। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज की जांच की, तो उसमें डॉक्टर आदिल अहमद राथर पोस्टर चिपकाते दिखाई दिया। डॉक्टर की खोजबीन शुरू हुई, तो उसके सहारनपुर में होने की जानकारी मिली। पुलिस ने 6 नवंबर को अंबाला रोड स्थित एक अस्पताल से डॉक्टर आदिल अहमद राथर को गिरफ्तार किया। पुलिस को उससे पूछताछ में कई हैरान करने वाली जानकारी मिली। शनिवार को पुलिस ने जीएमसी अनंतनाग में डॉक्टर के लॉकर से एक एके-47 बरामद की। उसने हरियाणा के फरीदाबाद के डॉक्टर मुफजिल शकील के बारे में बताया। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने तुरंत ही फरीदाबाद में डॉक्टर मुफजिल के ठिकाने पर दबिश दी, जहां से जहां से 350 किलो विस्फोटक और 2 एके-47 राइफलें और गोला-बारूद बरामद किया है।

दिल्ली बम धमाका...

भारत के लिए सधे और फूंक-फूंक कर कदम रखना जरूरी

कैबिनेट की बुधवार 12 नवम्बर को बैठक में जारी हुए प्रस्ताव में दिल्ली में लालकिले के पास हुए धमाके की घटना को पहली बार आतंकी घटना करार दिया गया। इस बैठक में पारित प्रस्ताव में इसे राष्ट्र विरोधी ताकतों की ओर से की गई एक कायराना हरकत बताया गया । प्रस्ताव में आतंक को लेकर जीरो टॉलरेंस की बात भी की गई। ध्यान देने वाली बात ये है कि पहलगाम हमले के बाद भारत ने ये साफ़ किया था कि आतंक को लेकर अब ज़ीरो टॉलरेंस की नीति न्यू नॉर्मल है। इसी के तहत पाकिस्तान को लेकर कड़े फैसले लिए गए और राजनयिक रिश्तों में कटौती जैसे कदम दिखे।

पहलगाम अटैक में पाक का सच दुनिया के सामने

हालांकि दिल्ली में बीते दिनों हुए आतंकी हमले को लेकर सरकार बेहद सधी हुई नीति पर चलती दिख रही है। जानकारों का मानना है कि मौजूदा वक्त में फूंक फूंक कर कदम रखना वक्त की जरूरत है। पूर्व राजनयिक अनिल त्रिगुणायत कहते हैं कि पहलगाम हमले के वक्त पूरी दुनिया के सामने था कि आतंकी हमले में पाकिस्तान का सीधा हाथ है।

भारत ने पाकिस्तान का ये सच दुनिया के सामने रखा। हालांकि पाकिस्तान ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सामने इसका खंडन करते हुए कहा कि भारत के पास इसे लेकर कथित तौर पर कोई सबूत नहीं हैं। किसी तरह की जांच में उसकी संलिप्तता प्रमाणित नहीं हुई है। ऐसे में मौजूदा वक्त में जब तक भारत के पास इसे लेकर पुख्ता सबूत नहीं होंगे जो ये बता पाएं कि हमले में किसी देश विशेष का हाथ है, तब तक भारत ऐसे किसी भी कदम से बचना चाहेगा।

बिना सबूत किसी देश का नाम नहीं

ऐसे में निश्चित तौर पर सरकार ऐसे रुख पर ही चल रही है , जिसके मुताबिक जब तक 100 फीसदी सबूत ना हो, तब तक किसी देश का नाम ना लिया जाए। दरअसल जानकार कह रहे हैं कि ये साफ है कि सरकार का ऑपरेशन सिंदूर अभी भी जारी है। सरकार की ओर से जारी प्रस्ताव भी बहुत साफ तरीके से आतंक को लेकर जीरो टॉलरेंस की नीति को साफ तौर पर रख रहा है। सरकार की नीति के तहत आतंकवाद अब 'एक्ट ऑफ वॉर' है, जिस तरह से सरकार ने इसे परिभाषित

किया है, उसके मुताबिक आतंकी गतिविधि में शामिल होने वालों पर सरकार को कार्रवाई करनी ही होगी।

आतंकी हमला घोषित लेकिन...

इस तरह की नीति के आगे भी कई परिणाम हो सकते हैं, जिनके बारे में गहराई से सोचे और परखे बगैर सरकार कोई कदम नहीं उठाएगा। पूर्व राजनयिक और अंतर्राष्ट्रीय मामलों के जानकार राजीव डोगरा ने कहा कि है, पिछली बार जब भारत के ऊपर आतंकी अटैक हुआ था तो एक आतंकी ग्रुप ने भी इसकी जिम्मेदारी भी ली थी। ऐसे में शक की किसी तरह की कोई गुंजाइश नहीं रह गई थी । केंद्र सरकार ने दिल्ली ब्लास्ट को आतंकी घटना तो करार दिया है, लेकिन ध्यान देने वाली बात ये है कि अभी इसके कई आयामों को लेकर बहुत स्पष्टता नहीं है।

किस तरह के आतंकी कैंपों पर एक्शन?

सवाल है कि अगर सरकार आतंकी कैंपों पर हमला करना चाहेगी तो किस तरह के आतंकी कैंपों पर एक्शन करेगी? ऐसे में बिना किसी तरह के ठोस सबूतों के अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में किसी का भी नाम लेना सही नहीं है। इस मसले पर भारत सरकार का रुख एकदम संतुलित है। ये बात अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को

रूबियो के उस बयान से ही स्पष्ट हो जाती है, जिसमें वो कह रहे हैं कि भारत इस मामले में भारत बहुत समझदारी के साथ चल रहा है और प्रोफेशनल तरीके से जांच हो रही है।

– निवेदन –

स्वतंत्र बोल से संबंधित कोई भी सुझाव या शिकायत हो तो आप नीचे लिखे पते पर भेज सकते हैं। फोन और ई-मेल पर भी जानकारी दे सकते हैं। इसके अलावा आपके क्षेत्र से घटित कोई घटना, समाचार, या अन्य कोई गतिविधि जो पत्रिका में प्रकाशन योग्य हो.. तो उसे भी भेज सकते हैं।

छत्तीसगढ़ का सबसे विश्वसनीय हिन्दी मासिक पत्रिका तेजी से बढ़ता यूट्यूब चैनल और न्यूज वेबसाइट को निर्भीक और जनपक्षीय पत्रकारिता के लिये आर्थिक रूप से सहयोग करें।

बंधन बैंक

बैंक खाता नंबर - 20100031810292
आईएफएससी कोड - BDBL0001958

SB स्वतंत्र बोल

संपादक स्वतंत्र बोल, शॉप नं. 258, लालगंगा शॉपिंग कॉम्पलेक्स, घड़ी चौक, रायपुर (छ.ग.)

97543-74333, bolswatantra@gmail.com

swatantrabol swatantrabol www.swatantrabol.com हिन्दी मासिक पत्रिका

RO. No. 13558/ 91